शिवोम् वाणी

सप्तम् खण्ड

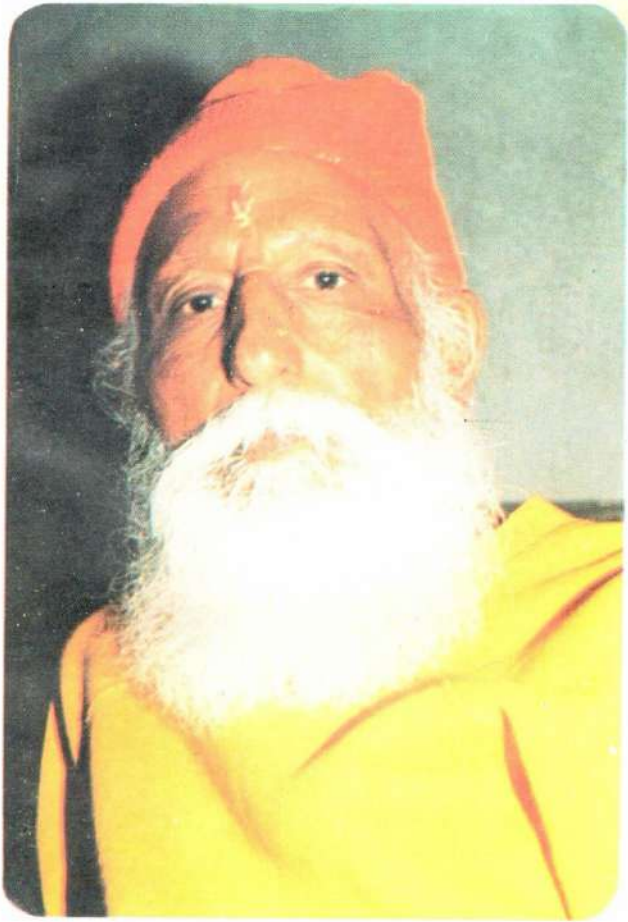

■ स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम् वाणी

सप्तम् खण्ड

TC-SE

स्वामी शिवोम् तीर्थ

शिवोम् वाणी

- प्रकाशक

  नारायण कुटी संन्यास आश्रम

  देवास (म.प्र.)

  प्रथम संस्करण - 1994 2000

  प्रतियाँ

  फोटो टाइप सेटिंग

  स्टार कम्प्यूटर एण्ड ग्राफिक्स

  4/1, नयापुरा इन्दौर

  इमरान ऑफसेट प्रेस,

  12-D मयूर नगर, इंदौर, फोन

  402862 & 63

भूमिका

शिवोम्वाणी प्रथम खण्ड की भूमिका लिखने का परम सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। इतने अल्प समय में ही इसके छः खण्ड प्रकाशित होकर सप्तम् खण्ड की भूमिका लेखन का दायित्व भी मुझ अंकिचन को सौंपा गया है, यह मेरा अहोभाग्य है और गुरुदेव की मुझ पर असीम कृपा की एक झलक भी ।

सन 1991 की जुलाई के मध्य, पूज्य गुरुदेव के अन्तस से भावपूर्ण भजनों का जो झरना प्रवाहित हुआ, उसने आज एक सैलाब का रूप धारण कर लिया है। इन भजनों के अविरल बहते प्रवाह में क्या नहीं ह तुलसी का विनय और दैन्य, मीरा का प्रेम भक्ति और समर्पण, कबीर की मस्ती, गुह्यता और वैराग्य, पश्चाताप आदि सब ही कुछ तो है।

वास्तव में यह अपौरुषेय है - परावाणी है। पूज्य गुरुदेव जहां कहीं भी होते हैं वे सदा साधकों के हित-चिन्तन में ही संलग्न होते हैं। ये भजन - साधकों के हित - चिन्तार्थ अनायास उनके अन्तस के बह निकले है। यह गुरुदेव की अहेतुकी कृपा ही है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। आवश्यकता है तो केवल उनके गायन, श्रवण, मनन और चिन्तन की ।

पूज्य गुरुदेव के चरणों में शत शत नमन के साथ।

गुरुपूर्णिमा

शुक्रवार 22 जुलाई 94

स्वामी राधाकृष्णतीर्थ

अनुक्रमणिका

भजन क्रमांक **पृष्ठ क्रमांक**

गुरुदेव

1. गुरु सेवा का फल है..... 1
2. तेरी कृपा हे सदगुरु मेरे..... 1
3. सतगुरु नहीं अधीन किसी के 2
4. गुरु बिन जगत भटकता हारा 2
5. गुरु शरण ही सब सुख व्यापे 3
6. सतगुरु मेले मिलाए प्रभु सों..... 3
7. दीनन का बल गुरु चरनन है 4
8. जो धारे गुरुमूरत हिरदय..... 4
9. धन्य धन्य गुरुदेव पधारे..... 5
10. बन बन बहुत भटकता हारा..... 5
11. बिन कानों मुझे सुनाए दिया 6
12. गुरु कृपा से अनुभव पावे 6
25. जैसे करत प्रकाशित जग को 7

माया

20. माया जीव पड़ा भरमा..... 11
21 माया तू दुख बहुत उठा 12
22. जीव है माया भरमाया..... 12
23 जैसे नदिया पिया मिलन को..... 13
24 प्रभुजी माया छूटत नाहीं..... 13
27 जग तो तीन गुणों में उलझा 15
194 आशा मरे न तृष्णा जाए 100

उर्दू

भजन क्रमांक **पृष्ठ क्रमांक**

26 दुनियाँ से क्या गिला है 14

151 जब चली दुनियाँ से डोली 78

152. मैं तड़पती ही रही..... 78

153. है तमन्ना यह मेरी 79

154. मैं तलबगार हूं पीने का 79

155. मयखाने से पीकर निकला है..... 80

156. मैं बैठी हूं नाम तेरे पर 80

157. परदे के बाहर आ जा..... 81

158. मैं तलबगार नहीं 81

159. तुम आओ न आओ तेरी मौज है..... 82

160. मौत की आगोश में 83

161. इश्क चाहे राम का तो..... 83

162. क्या क्या नहीं सहे हैं..... 84

वन्दना

32. हे प्रभु सुन्दरता सब तेरी..... 17

33. सर्व वियापक सर्व नियन्ता..... 18

178. कोई मोहे प्रीतम देय मिलाए 92

179 तू ही गुरु पति प्रभु मेरा..... 92

180 प्रभु ही त्यागी है बैरागी..... 93

प्रकीर्ण

भजन क्रमांक पृष्ठ क्रमांक

34 पवन गति अन्तर तन माहीं 18

35. कामना मुझको सताती जगत की 19

36. है ठोक बजा शिवओम् लिया 19

37. त्यागता हूँ जगत को 20

13. जग में सब ही नंग मुनंगे 7

14. हे प्रभु कृपा तेरी है मो पर 7

15. दर्स की तड़प है लागी अन्दर 8

16. टूट गई है माला सिमरन 9

17. प्रभु मोहे मीठा लागत मरना 9

18. माँ जगदम्बा चढ़ी गगन में 10

19. पी की सेज दिखात न कोई 11

प्रेम

38 मैं तो राम दीवानी होई 20

39. क्या तीर चलाया कैसा है 21

40. प्रभु की आस लगी है मोहे 21

41 प्रभु किरपा है मेघ समाना 22

42. मैं तो भटक भटक कर हारी 22

43. प्रीत लगी प्रियतम सों अब तो 23

44. प्रभुजी, प्रियतम् प्राण अधारे 23

45. अमृतधारा बरसे हर दम 24

भजन क्रमांक पृष्ठ क्रमांक
46. प्रभु मेरे मैं वैरागन होई 24
47. गुरुजी ! मैं प्रियतम कब पासी 25
48. है प्रेम बदरिया बरस रही 25
49. प्रेम नगर की वासी 26
50. मैं तो हुई गई बावरी 26
51. आरत भाव हुआ है 27

सीख

28. मैं भूल गई 15
52. जगत विसैला मारक घातक, ... 27
53. सादगी में जो मजा है 28
54. परखा देखा सब संसारा 28
55. सोई कामिनी जाग री 29
56. जब राखनहार प्रभु होवे, ... 29
57. बन ठन बैठी पिया के कारण 30
58. देव जगाए 30
59. काया अंदर साचा राम अधारा 31
60. नाम नहीं विश्राम नहीं 31
61. गर्व करें क्यों बावरे 32
62. मनवा राम तू क्यों बिसराया 32
63. भूले फिरे क्यों तू मनवा 33
64. जग विष जाए हरि कृपा से, ... 33
65. सुंदर आकर्षक है काया 34

भजन क्रमांक **पृष्ठ क्रमांक**

66. गुरु देवे जो नाम अपारा 34
67. मनवा तू पछताएगा 35
68. लीला तेरी अपरम्पारा 35
69. अजब नाम है अजब नाम है 36
70 दीन दयाल प्रभु है मेरा, ...36
71. जग में जो तू पड़ा है 37
72. सुख को खोजे क्यों तू जग मे 37
73 घूंघट ओढ़ के बैठी सजनी, ...38
74. सिमरन नाम है अन्तर्पूजन, ...38
75. क्यूं तू भटकता इधर उधर है 39
76. सिमरन करत है राम प्रभु का 39
77. जग में जनमें मानुष 40
78. जग के लोग चमार की भांति 40
79. हरि पर दृढ़ विश्वासा होई 41
80 भाई रे रसना माला कीजै 41
81. मनवा एक से तू कर प्रीत 42
82. बड़ी उमरिया बाधक नाहीं 42
83 जग को क्या तू मारए 43
84 सुनो शिवोम् उमर है निकली 43
85 निर्भय रहे जगत में ऐसा 44
86 वासना कोई नहीं और 44
87. हुआ सवेरा सोवत है 45
88. तू राम नाम हितकारी 45

89. तेरा जनम सिरात है जाए 46
90. नाम सिमर तू नाम 46
91. मनवा राम चरन चित्त लाए 47
92. तेरा जीवन निकलत जाए 47
93. गया मैं समुन्दर में गोता लगाने 48
94. तू करता उपदेश घनेरे 49
95. जो आता है व्यथा सुनाता 49
96. उड़ चला जब डाल से 50
97. मनवा तू पछताएगा 50
98. क्या मानुष तन लाभ कमाया 51
99. तेरी उमरिया निकसत जाए रे 51
100. मैं चला था ढूंडने भगवान को 52
101. समझ ले कोई नहीं है साथी 53
102. दीप जले हे मन के माहीं 53

विनय

103. पापी हिरदय भवन बना है 54
104. प्रभु हौ डार दिये हथियार 54
105. सुख त्याग कर जगत के 55
106. प्रभु हौं एक ही बात कहीं 55
107. नाक मैं रगडूं माथा टेकूं 56
108. अखियां बरसे 56
109. मन मंदिर में गुप्त हो बैठे 57

भजन क्रमांक पृष्ठ क्रमांक

110. यह जीवन सुन्दर जाए हो 57
111. प्रभु मेरे में शक्ति साधन 58
112. प्रभु जी कैसे भेद तेरा मैं पाऊँ 58
113. आधि व्याधि उपाधि सब ही 59
114. पीय मैं, तुमको कैसे पाऊं 59
115. मैं हूं कुटिल 60
116. प्रभु लगाए शत्रु पीछे 60
117. मन मेरे जो बीतत है 61
118. जीव तेरे सब स्वामी 61
119 तेरे हूं अब हवाले, ... 62
120. मैं चली आई तेरा नाम 62
121 सागर तीरे राह निहारू 63
122 हरि ही साजन प्राण अधारा 63
123. हे स्वामी तू दान प्रदाता 64
125. बंधन मुक्त करो प्रभु मोहे 65
126 हे शिवशंकर त्रिपुरारी 65
127. दया करो दुखियारी पर 66
128. हरि सुमरन में मन है लागा 66
129. मैं भूल भी जाऊं तोहे 67
132. प्रभुजी राखो मोहे शरणी 68
133. प्रभुजी, जग ने बहुत रूलाया 69
134 पाप के घर में हं मैं बैठाहूं 69
137 घट ही छुपा है प्रियतम मेरा 71

भजन क्रमांक पृष्ठ क्रमांक

138. निराकार आकार धरे है 71
139. मन की व्यथा तो में ही जानूं..... 72
140. हे माँ शरण में आया..... 72
141. तज तुम चरन कहां मैं जाऊं..... 73
142. हे प्रभु मोरी विनती सुन लो 73
143. प्रभु मोरे मनहि विराजो आय..... 74
144. हरि मैं कबसे खड़ा तेरे द्वारे 74
145. मैं तो भूलनहार प्रभुजी..... 75
146. बालम कहां गए तुम..... 75
147. हरि जी, तृष्णा किस विधि जाए 76
148. प्रभु मैं दीनन का सरताज 76
149. दीन दयाल शरण मैं तेरी..... 77
150 आशा लिए दुआरे तेरे 77

मन

124. हे प्रभु का विधि मन समझाऊं.....64
130. मनवा रूप धरे काया का..... 67
131 मैया तेरी किरपा अजब अलौकिक 68

गोरख कल्याण

135. कब तक रहूंगी बैठी 70

कृष्ण

136. ऐ मोहन प्यारे आ जाओ 70

भजन क्रमांक पृष्ठ क्रमांक

वियोग

163. जब हरियाली मैं देखत हूँ 84
164. प्रभु विरह का सुख है पाया 85
165. दुख विरह का होत है भारी 85
175. मैं तो तड़प दिन राती 90

विरह

176 हम जीव अति ही तुच्छ बने 91
177 मोहे पार न उतरा जाए 91
166 मन से न जाये 86
167 मैं मनुहार करूं तेरी सजना 86
168 पल भर चैन प्रभु बिन नाहीं 87
169 तनवा छिन छिन छीजे मोरा 87
170. जग अन्जाना क्या जाने है 88
171 हिरदय दर्द लगा प्रियतम का 88
172. कब तक मैं राह देखूं 89
173. बैठा रहूँ दर पह तेरे 89
174 जब कारी बदरिया देखत हूँ 90

स्तुति

181 लगन लगी है राम प्रभु से 93
182 प्रियतम तुमसा नहीं है कोई 94
183. सुखी होए सत संगत पाए 94

प्रतीक्षा

भजन क्रमांक पृष्ठ क्रमांक

186 मैं रोऊं अकुलाऊं हरदय...96

187. राह खड़ी प्रियतम के मैं तो...96

नाम

188 नाम जपन आनंद अनूठा...97

189 हरि सिमरन सारा जग तारे... 97

पंजाबी

190. उमर गुजार दिती मैं ऐबे कुज...98

आनन्द

191. मन प्रभु संग लागा...98

192. दीपक ऐसा दिया जलाए...99

193. तन भीगे तो भीगन देयो...99

अन्त का पश्चाताप

195 अब सफेदी आ गई...100

196. है अंधेरी रात लंबी हो रही...101

अन्तिम चरण का पश्चाताप

29 छिन छिन पल पल घटती जाए... 16

30. अन्तर बाजा बजत निरन्तर 16

भजन क्रमांक **पृष्ठ क्रमांक**

31. अब प्रेम हुआ जो राम से है 17

197. सोचते सोचते रह गए..... 102

कीर्तन

184 राम भज राम भज राम भज बावरे..... .95

185 राधा राधा राधा..... .95

गुरुदेव

1 गुरु सेवा का फल है यह ही, मन वांछित फल पाया।
बंधन काट जगत के सारे, मारग मुक्ति पाया ॥
जनम जनम के कर्म कटे हैं, मनवा निर्मल होया ।
आशा ममता दूर हटी सब, अन्तर सुख है पाया ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु किरपा कीनी, किरिया शक्ति जागी ।
क्रियाशीलता अंतर परगट, मन आनंद मनाया ॥
सद्गुरु के बलिहारी जाऊं, अनुभव अजब कराया ।
तम भागा, मन हुआ प्रकाशित, हिरदय प्रेम समाया ॥
गुरु शक्ति अन्दर आलोकित, गुरु ही सर्व समाया ।
ऐसी प्रीत जगी मन अन्दर, राग द्वेष बिसराया ॥
तीर्थ शिवोम् आनंदित मनवा, जग में नाहीं डोले ।
अन्तर गुरु करत है लीला, लीला में सुख पाया ॥

2 तेरी कृपा हे सद्गुरु मेरे, कृपा बिना न होई ।
सुख अनुपम उपजे मन माहीं, मन से तृष्णा खोई ॥
सतिगुरु मिले आनंदित मनवा, शोक मोह मद नाशे ।
हर्ष विराजे सदा हृदय में, बंधन ढीला होई ॥
राम नाम तू सिमर ले मनवा, साचा प्रियतम पाए।
मिथ्या जगत विलीन हो सन्मुख, माया देत है खोई ॥
साचा गुरु, ज्ञान गुरु साचा, उपजत ज्ञान है अन्तर ।
हरदम प्रेम समाए मन में, ममता माया खोई ॥
सद्गुरु कृपा से जीवित मुक्ति, सदा एक रस रहता ।
प्रियतम आए मिले अन्तर में, दुविधा सारी खोई ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा सतिगुरु की, जीव जो लेत पछाने
मन में होत गुरु आलोकित, मल अंतर सब खोई ॥।

3. सतगुरु नहीं अधीन किसी के, मौज का है वह स्वामी।
भाव उठे कल्याण का मन में, कृपा करे तब स्वामी ॥
गुरु मारग जब होवत परगट, मन की मैल है धोता ।
सतगुरु मेरा ऐसा दाता, प्रतिपालक वह स्वामी ॥
नाम कमाई जो जन करता, पावे सुख घनेरा ।
सुखी रहे सुख देता जग को, नहीं कृपा बिन स्वामी ॥
जग प्रपंच है ऐसा बनया, सतगुरु मिलन न देवे।
मुक्ति नहीं कृपा बिन सतगुरु, मन में तृष्णा स्वामी ॥
आया शरण तुम्हारी सतगुरु, दर तेरा है पकड़ा।
करो अनुग्रह मो पर प्रभुजी, मिटे कलेश है स्वामी ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, तुम ही दीनदयाला।
चरण पड़े की लाज संभारो, दयावंत हे स्वामी ॥

4. गुरु बिन जगत भटकता हारा ।
बना दीवाना जग के माहीं, पाया आर न पारा ॥
जनमे मरे वह बारम्बारा, मन थिरता है नाहीं ।
सुख दुख रहत है भोगत निसदिन, समझ न पड़े बेचारा ॥
जो मन शरण गहे गुरुवर की, मन निर्मलता पावे।
जग से बना अछूता वह है, हो जावे निस्तारा ॥
सद्गुरुदेव बसे जा अंतर, मैल न मन के माहीं ।
दूर हटे तम, हो परकाशित, मन आनंद अपारा॥
सद्गुरु एक बचावन हारा, दीन हीन जीवों को ।
पार करत वह भवसागर से, छूटे सभी विचारा ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, राखो लाज हमारी ।
पड़ा रहूं चरणों के माहीं, छोड़ के झगड़ा सारा ॥

5. गुरु शरण ही सब सुख व्यापे ।
हरि घर आदर मिले घनेरा, अन्तर आनन्द व्यापे ॥
सब दुख दूर भए ताही से, भ्रम भय जात नसाई ।
प्रेम समाया हिरदय माही, अनुभव राम व्यापे ॥
गुरु-कृपा जो जन है पाता, सकल मनोरथ पूरे ।
भव बंधन छुटकारा होवे, अन्तर राम व्यापे ॥
गुरु शरण से ही परमारथ, मारग रोक न कोई ।
चेतन नाम प्रकाशित होए, चेतन जगत व्यापे ॥
सद्गुरुदेव परमेश्वर, ताही ध्यान अनन्ता ।
निर्मल होत विकार सभी मन, दृष्टि अनत व्यापे ॥
तीर्थ शिवोम् गहो गुरु शरणी, ताही सुख अतीता।
जाए, छूटे सकल पसारा, पारब्रह्म ही व्यापे ॥

6. सतगुरु मेल मिलाए प्रभु सों, अनुभव देत कराए।
आशा तृष्णा को छुड़वाकर, प्रति प्रकट कराए।
जो जन शरण पड़े सतगुरु की, जग से होत नयारा।
अन्तर्मुखता को अपनाकर, मन आनंद वह पाए ॥
जीवत ही आ हरि मिले हैं, घर में, हिरदय माहीं ।
सर्व-नियन्ता, हरि पछाने, शोक सभी ही जाए॥
मन में बैठा, हरि व्यापे, अन्तर्यामी सबका ।
गुरु बिना दीखत है नाही, वो ही प्रकट कराए ॥
धन्य गुरु जिन हरि समाया, हरि भाव उपजता।
हरि गुरु में अंतर नाही, एक ही रूप धराए ॥
तीर्थ शिवोम् हरिहर स्वामी, सतगुरुदेव तुम्ही हो ।
मैं तो जान सकूं न तोहे, तुम ही देयो जनाए ।

7. दीनन का बल गुरु चरनन है।
शिव शक्ति ही चरनन माही, हो न सकत वरनन है ॥
जब लगि जीव लगा पुरुषारथ, तब लगि होत है कुछ न ।
करत समर्पण चरनन माहीं, दुख जंजाल हरन है ॥
चरन भरोसे जो है रहता, पावत वह सुख ही है।
तृष्णा त्याग, जगत की माया, हिरदय राम वरन है ॥
तीर्थ शिवोम् लगा गुरु चरणी, मन आनन्द भया है।
काहे अहम् करे है प्राणी, न मन देय चरन है ॥

8. जो धारे गुरुमूरत हिरदय, मन चंचलता जाए ताकी।
गुरु विराजे मन के माही, करत वासना क्षीण है वाकी ॥
छका रहत है गुरु प्रेम में, हिरदय भाव है रहता ।
सेवा ही वह है करता, तृष्णा रहत न बाकी ॥
सद्गुरुदेव कृपा ही माने, भगति भाव जगावे ।
नाचत गावत मोद मनावत, रहे न माया बाकी ॥
गुरुस्वरूप ही जगत व्यापक, ताका सकल पसारा ।
किरपा बरसावे भक्तन पर, न्यारी महिमा ताकी ॥
सतगुरु अपना आप जगावे, करत जीव किरपा वह।
लीला करत अलौकिक अन्तर, किरिया है, सब वाकी ॥
सद्गुरु देव कृपा मो कीनी, निज स्वरूप प्रकटाया।
तीर्थ शिवोम् लगा चरणों में, गुण गावे है ताकी ॥

9. धन्य धन्य गुरुदेव पधारे।
अन्तर हृदय उजागर कीना, माया तृष्णा हारे ॥
सतगुरु देव कृपा बहु कीनी, दीन को आदर दीना ।
मो सम को बड़भागी नाही, पड़ी थी मैं मंझधारे ॥
अब तो मन आनन्द भरा है, उछलत उछलत फिरती ।
नाचूं गाऊं मौज मनाऊं, आए प्रियतम प्यारे ॥
सद्गुरुदेव प्रकट अन्तर में, लीला करत नयारी।
मैं तो रहत निहारत लीला, दिए पाप सब जारे ॥
यह फल सद्गुरु आवन का है, किरपा अपरम्पारा।
अब तो चिंता शोक मिटा है, मुझको पार उतारे ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, बलिहारी मैं जाऊं।
परगट हो, किरपा तुम कीनी, बंधन काटे डारे ॥

10. बन बन बहुत भटकता हारा।
भ्रम का नाश हुआ है नाही, वह तो बढ़त वधारा ॥
ठौर- ठौर हौं भटकत-भटकत, आया तुमरे द्वारे।
किरपा जब है मुझ पर कीनी, चेतन भाव अधारा ॥
मैं तो रमा जगत में अब तक, बंधन मेरे काटे।
किरपा ऐसी कीनी मो पर, पाया अपरम्पारा॥
सतगुरु देव तुम्हारी जय हो, दीनन भक्तन ताईं।
पार उतारे भवसागर से, ताही है अवतारा ॥
तेरा नाम जपूं दिनराती, तेरे गुण मैं गाऊं ।
जुड़ा रहूं, चरणों के माहीं, ता में ही निस्तारा ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, किरिपा अनुपम कीनी।
काटा फंद जगत का सारा, आवागमन किनारा ॥

11. बिन कानों मुझे सुनाए दिया, और आंखों बिन दिखलाय दिया।
सतगुरु कृपा की लीला है, पावों बिन मुझे चलाय दिया ॥
है अंतर नाद प्रकट होता और अजब दिखाई देता है।
सतगुरु किरपा के क्या कहने, अनुभव है गति कराय दिया।
अंधेरा चाहे कितना भी, परकाश दिखाई है देता।
है चेतन सत्ता की किरिया का, अनुभव मुझे कराय दिया ॥
गुरु किरपा दृष्टि है न्यारी, हो जावे जिसकी मानव पर।
है अनत स्थिति परगट कीनी, सीमा से मुझे छुड़ाय दिया ॥
चिंता तृष्णा सब दूर गयी है, माया ममता भाग गए।
अब तो आनंद समाया है, है भ्रम को परे हटाय दिया ॥
गुरु किरपा अपरम्पार बनी, शिवओम् जो अनुभव कर लेता।
है जीव तो भाव हटाय दिया, अन्तर शिव-भाव जगाय दिया ॥

12. गुरु कृपा से अनुभव पावे, परगट राम करावे ।
पण्डित मान करे बहुतेरा, यम के फंदे जावे ॥
राम विराजे अन्तर माही, गुरु कृपा प्रकटावे ।
अन्तर में ही दर्शन पावे, माया मार भगावे ॥
नेह लगावे प्रियतम प्यारे, न कुछ दूजा मांगे।
ताही चरण हृदय में धारे, अमृत नाम कमावे ॥
है वह दाता, सब जीवों का, याचक सब संसारा ।
न संकोचे दात किसी से, आपन भी दे जावे ॥
पंच विकार करे वह ठण्डे, मन अभिमान नसावे ।
आतम लाभ कराता दीनन, सागर पार लंघावे ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, शरण तुम्हारी आया।
मन में वास तुम्हारा होवे, दुविधा सकल मिटावे ॥

13. जग में सब ही नंग मुनंगे ।
घूमत फिरत हैं, कपड़े पहने, अंदर है सब नंगे ॥
आतम राम सदा जग न्यारा, न ओढ़े न पहने।
न कोई परिवर्तन होता, न चंगे न मन्दे ॥
जीव करे है कर्म जो संचित, वह ही परदे माया।
मन आवरण है डाले ऊपर, बन जाए फिर बन्दे ॥
आतम रूप जगत है सारा, मुक्त बना ही रहता।
न्यारा न्यारा दीखत जब है, हो जावे सब गंदे ॥
गुरुकृपा से चेतन शक्ति, क्रियाशीलता पावे।
उतरे परदे, निर्मल मनवा, न बन्दे न गन्दे ॥
तीर्थ शिवोम्, दया कर स्वामी, उतरें परदे सारे।
रूप स्वरूप में सभी प्रतिष्ठित, सब नंगे के नंगे ॥

14. हे प्रभु कृपा तेरी है मो पर, मारग गुरु दिखाया।
दूर भए दुख सारे मेरे, अन्तर प्रेम जगाया ।।
साचा साईं साचा सतगुरु, मन साचे में लागा।
माया टूटी, बंधन काटे, साचा हृदय समाया ॥
सतिगुरु देव दया की मूरत, दीनन कृपा करत है।
सद् व्यवहार है साची वाणी, साचा शब्द सुनाया ॥
सद्गुरु किरिपा ही से पावे, साचा नाम प्रभु का।
साचा बाण हृदय में लागा, साचा घाव कराया ॥
जग झूठा सचियारा प्रभुजी, साचे ही सुख उपजे ।
झूठा जग दुख देत सदा ही, साचा सुख ही भाया ॥
तीर्थ शिवोम् हे साचे सद्गुरु, शरणी अपनी राखो ।
लीन रहूं साचे चरणों में, साचे साच मिलाया ॥

15. दर्स की तड़प है लागी अन्दर, दूजा नहीं सुहावे ।
सिमरन माहीं ही मन लगा, नाहीं जग में जावे ॥ .
रस चाखे वह नाम का हरदम, चेतन मन के माहीं ।
सतिगुरुदेव शरण में जावे, भेद प्रभु का पावे।
तड़पे दुनिया मिलन को तेरे, विरला सतिगुरु जावे ।
सेवा भगति ज्ञान का साधन, सतिगुरु ते ही पावे ॥
प्रभु आप कर्तार अनोखा, सुन्दर जगत बनाया।
सतिगुरु सेव करे सो पावे, सतिगुरु देत जनावे ॥
चेतन नाम की चेतन लीला, अन्तर माहीं प्रगटे।
नाम हुआ जब चेतन अन्दर, दृष्टापन प्रगटावे ॥
चेतनता जब जागे अन्तर, चढ़ती ऊपर जाती ।
निर्मल पाप करे वह सारे, अन्तर ज्ञान जगावे ॥
मन निर्मल अन्दर परकाशा, दृष्टा भाव है नाही।
सोहम नाद जगे गुरु किरपा, मन में ही दर्शावे ॥
मैं तू भेद मिटे तब सारा, भिन्न राम है नाही।
हो प्रतीत यह अनुभव तब है, द्वेत भाव मिट जावे ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, अन्तर प्रेम जगाओ।
जोत से जोत बने परकाशित, तम सारा मिट जावे।

16. टूट गई है माला सिमरन, मनवा दुख है पाए।
आकुल व्याकुल हिरदय मेरा, मो थिर रहा न जाए ॥
अब मन चंचल बना है मेरा, रहता जग भोगों में।
प्रभु विरह सम दुख न कोई, को से कहा न जाए ॥
सिमरन राम ही सुख का सागर, चेतन नाम निरंतर ।
सांस-सांस हरि नाम जो सिमरे, मन आनन्द समाए ॥
काहे नाम न सिमरे मूरख, सुख का है जो दाता।
सिमरन नाम मनोरथ सगले, भाव बंधन कट जाए॥
घूमत है जब माला सिमरन, थिरता मन है पाए।
टूटत जाए जब है माला, मन अस्थिर हो जाए ॥
तीर्थ शिवोम् तू राम सिमर ले, इसमे ही सुख पावे ।
तू सिमरन सेवा में ही तो, दर्शन हरि का पाए ॥

17. प्रभु मोहे मीठा लागत मरना ।
मरना भला कि छुटे जग से, यही मारग है तरना ॥
जग तो मरना जानत नाही, रहत भ्रमित जग माही ।
माया छोड़ जो मरना पावे, वह ही मरना मरना ॥
माया तो ऐसी बन आई, पकड़े जीव को रहती।
आवागमन घुमाती रहती, देत नहीं है मरना।
प्रभु कृपा ही माया छूटे, जग का फंद कटे है।
तभी जीव पावे छुटकारा, तभी पावत है मरना ॥
मिथ्या जग मरने से डरता, मरन न चाहे कोई।
जो मरने का रूप वह समझे, तब चाहत है मरना ॥
तीर्थ शिवोम है मेरे प्रभुजी, मरना मोहे दीजो।
जग चाहे न चाहे मरना, मैं तो मांगत मरना ॥

18. माँ जगदम्बा चढ़ी गगन में, खेल तमाशे करती ।
कभी हंसे रोए कम्पाए, सम्भल सम्भल कर चलती ॥
कभी मस्त होती मन ही मन, परगट भाव अनेकों ।
तरह तरह की किरिया करती, ठुमक ठुमक पग धरती ॥
आसन प्राणायाम है करती, उछलत फुदकत जाती ।
भर जाता आनन्द है मन में, यह सब माँ ही करती ॥
चींटी पक्षी बंदर तीनों, गति से वह है चाले ।
गिरती पड़ती उठती चलती, आगे आगे बढ़ती ॥
बादल बिन वर्षा बरसाए, बिन बिजली चमकारा ।
बिन चाले चलता पग ऐसा, नहीं समझ कुछ पड़ती ॥
बिन सूरज अन्तर परकाशा, तम बिन घोर अंधेरा ।
संतति बिन माँ बाप के होती, जगत अनेक ही करती ॥
जब कर्मों को वह उछलाती, क्रिया रूप हो जाते।
कर लीला अन्तर परकाशित, क्षीण उन्हें है करती ॥
यह लीलाएं करे भगवती, साधक तो बस देखे ।
करता - भाव विहीन बना वह, माँ ही सब कुछ करती ॥
परिणित करती कर्मों को वह, क्रियाशीलता माहीं ।
निर्मल शुद्ध करत है मन को, अन्तर आनन्द भरती ॥
चढ़ती जाए गगन में ऊपर, एक एक आवरण सभी।
जाएं उतरत माया परदे, प्रियतम से वह मिलती ॥
तीर्थ शिवोम् विनय तुम आगे, नीच कुकर्मी पापी।
समझत नाहीं कुछ भी मैं तो, माँ ही सब कुछ करती ॥

19. पी की सेज दिखात न कोई।
बातें करत करत थक हारे, पर पहुंचा न कोई ॥
किरपा बिन दीखत है नाही, जतन करे कितना भी ।
किरपा से ही मारग मिलता, जतन नहीं फिर कोई ॥
जब तक जीव पड़ा पुरुषारथ, तब तक कृपा न होई।
जब छूटे पुरुषारथ अपना, किरिपा परगट होई ॥
पी की सेज आनन्द घनेरो, मन ताही ललचाए।
जब यह अवसर मिले सुहाना, मन आनंदित होई ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, परगट सेज तुम्हारी।
गले मिलूं मैं तुमरे प्रियतम, शोक मोह न कोई ॥

माया

20. माया जीव पड़ा भरमाए चैन न पल भर पाए।
फिर भी धावत जग के ताई, पर सुख नाही पाए ॥
माया ऐसा रूप धरा है, बनी आकर्षक बैठी।
रूप दिखात लुभाए मनवा, दुख में फिर पटकाए ॥
रूप दिखे माया का सारा, लीला नजर न आवे।
रहे बेचारा मनवा उलझा, पर पीछे पछताए ॥
कृपा करो हे माया रानी, अब तो पीछा छोड़ो।
दुख है बहुत दिखाए तुमने, मन न अभी लुभाए ॥
पाओं पड़ू, कर जोड़ूँ तुम पह, अब हूँ मैं भर पाया।
अपना आप समेटे अब तो, जा की वहीं पह जाए॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे माया, मैं न सकत उठाए।
जा की माया वह ही जाने, वह ही उसे उठाए ॥

21. माया तू दुख बहुत उठाए।

तू तो लीला राम प्रभु की, समझ न कोई पाए ॥
परदा भरम पड़ा है मन में, लीला माया दीखे ।
अंधा जीव न देखे उसको, माया में भरमाए ॥
जब तक अहं भरा है मन में, लीला नाही दीखत ।
अंध कूप में पड़ा बेचारा, भव में गोते खाए ॥
करत तुम्हे बदनाम जगत है, माया ठगनी कहता।
यह न समझे वह ही झूठा, झूठे कर्म कमाए ॥
लीला दीखे माया जाए, माया भ्रम है मन का ।
भरम हटे माया निपटारा, निस्तारा हो जाए॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे माया, काहे दुख पावत हो ।
जाओ जहाँ से आई तुम हो, यह जग तुम्हे सताए ॥

22. जीव है माया भरमाया ।

बंधक बना जीव माया का, नाही सुख है पाया ॥
सुख दुख पाता जीव बेचारा, छूट न पाता उससे।
उलझा रहे जगत के माही, माया ही गुण गाया ॥
माया मिथ्या ठगिनी नटनी, कुलटा अत्याचारी ।
मोहित करती नाच गायकर, मनवा है ललचाया ॥
जतन करत है जो छूटन का, छूटन वह न देवे।
उलटा कसती, लेती पकड़े, छूट नहीं वह पाया ॥
सद्गुरुदेव कृपा बिन उससे, मुक्त न होता कोई।
गुरु कृपा ही एक सहारा, बंधन काट न पाया ॥
तीर्थ शिवोम् नमो हे माया, किरपा मुझे पर राखो ।
लेयो समेट पसारा मो से, मैं तो अब घबराया ॥

23. जैसे नदिया पिया मिलन को, भागी भागी जावे ।
तैसे राम मिलन को मनवा, पी-पी कूक लगावे ॥
नदिया सागर एक हों जैसे, पृथक पृथक न रहते।
तैसे जीव प्रभु से मिलकर, रूप राम हो जावे ॥
जग माया है करे कुटिलता, एक न होने देती।
प्रभु मार्ग से रस्ता खुलता, विघ्न परे सब जावे ॥
भगत डरे माया से नाहीं, भक्ति रक्षा करती।
माया को लीला कर देखे, वह फिर क्यों पछतावे ॥
सतगुरु देव है करत अनुग्रह, जागृत किरिपा होती ।
अन्तर लीला राम ही दीखे, मन निर्मलता पावे ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, राखो लाज हमारी।
किरपा पाऊं, लीला देखूं, मन चरणों में जावे ॥

24. प्रभुजी माया छूटत नाहीं ।
मैं तो जतन करत हूँ हारी, माया हटत है नाहीं ॥
यह माया तो तुम्हीं फैलाई, तुम्हीं समेटो इसको।
मैं तो शक्तिहीन दीन हूँ, मो यह हटत है नाही ॥
क्या सूझी तोहे मेरे प्रभुजी, माया दीन रचाई।
सारा जग यह रही नचावत, फिर भी थकत है नाहीं ॥
सन्त कहत यह लीला तुमरी, पर मैं माया उलझा ।
लीला है या माया तुमरी, मैं तो समझत नाहीं ॥
तुम्हीं कृपालु दीनदयाला, काढ़ो माया मोहे।
हूँ मैं भवसागर में डूबत, उबर सकत मैं नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, करो अनुग्रह मो पर।
माया जाल हटाओ अपना, मो यह ताकत नाहीं ॥

गुरुदेव

25. जैसे करत प्रकाशित जग को, दीपक आप जलावे ।
अपना आप जलाए साधक, जग परकाश करावे ॥
अपना आप तपाना साधन, यह तो सब जग जाने।
करना बहुत कठिन है भाई, नहीं परकाश फैलावे ॥
सद्गुरु किरपा बिना है साधन, होना बहुत कठिन है।
किरपा से ही रत साधक हो, अपना आप जलावे ॥
तत्व पछाना यह ही मैंने, किरपा बिन साधन न ।
किरपा शक्ति ही वह शक्ति, निर्मल मनवा जावे ॥
सद्गुरुदेव कृपा जब होती, करत है लीला अन्तर ।
साधक तो आनन्द मनावे, मन में ही सुख पावे ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, अजब अनुग्रह कीना ।
तम भागा, अन्तर उजियाला, आतम लाभ कमावे ॥

उर्दू

26. दुनियाँ से क्या गिला है, दुनिया तो इक खिलौना ।
तकदीर में लिखा जो,वह ही तो होगा होना ॥
भूले फिरे बशर है, दुनिया का नाम धरता ।
पर यह नहीं समझता, किस्मत से पाना खोना ॥
आया जहाँ में लेकर, किसमत को साथ अपने
फिर क्या गिला किसी से, है फालतू का रोना ॥
चाहे खुशी जो कोई, इस बात को वह समझे।
है दिल का खेल सारा, मांगे दरी बिछौना ॥
तू याद कर प्रभु की, तस्कीं जो चाहे दिल की।
इसमें भला है तेरा, जीवन को क्यो है खोना ॥
शिवोम् कर भला तू, और भूल जा किए को।
मालिक तेरा प्रभु है, उसके सहारे होना ॥

माया

27. जग तो तीन गुणों में उलझा ।
गुणातीत को जानत नाहीं, कैसे कोई सुलझा ॥
गुणातीत गुरु से परापत, गुरु ही भेद बतावे ।
गुरु शरणी जब लागे मनवा, तो ही वह है सुलझा ॥
ताते जीव पड़ा भवसागर, फिर फिर गोते खावे ।
जग में वह ही रमा रहता है, नाहीं है वह सुलझा ॥
राम परे है तीन गुणन से, जगत गुणों के अन्दर ।
जब तक राम शक्ति न परगट, कैसे जीव है सुलझा ॥
गुरु कृपा के बिना नहीं यह, भेद अनूठा खुलता ।
नहीं तो पूजा तीरथ उलझा, नहीं काम कुछ सुलझा ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, शरण तुम्हारी आया।
कृपा बिना तो मानुष नाहीं, भव जल से है सुलझा ॥

सीख

28. भूल गई, मैं भूल गई, भगवान को मैं तो भूल गई ।
उलझी जग विषयन मैं ऐसी, मैं तो प्रियतम को भूल गई ॥
यह जग तो केवल धोका है, पर लेत फसात जीव को है।
मैं फस गई भोगों में ऐसी, मैं प्रियतम प्यारा भूल गई ॥
कौन छुड़ाए जग बंधन से, कौन सहारा देय मुझे।
मन तो ऐसा उलझा जग में, अपना राम ही भूल गई ॥
मन मेरा उन्मुक्त बना है, जाता भाग जगत को ही,
जतन करूँ मन संयम का पर, मैं तो राम ही भूल गई ॥
जो सदगुरु देव कृपा कर दे, मन प्रेम प्रभु का तभी जगे ।
मैं पाऊं प्रीतम प्यारे को, जिसको मैं अब तक भूल गई ॥
शिवओम् कृपा सदगुरु देवा, मुझको प्रियतम दिखलाय दयो ।
मैं केसी मूरख नारी हूँ, जो राम ही अपना भूल गई ॥

अन्तिम चरण का पश्चाताप

29. छिन छिन पल पल घटती जाए, ठहरत नहीं उमरिया ।
उसको पकड़ो बीतत जाए, हाथ न आए उमरिया ॥
भूला फिरता जीव बेचारा, नित रहने की सोचे।
पर आयु तो बीत ही जाती, थिर न रहे उमरिया ॥
भोग वासना में ही रमता, जीव है आठों पहरों।
भोग है चंचल हाथ न आवे, बीती जाए उमरिया ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनावे, स्वप्न अनेकों देखे।
चकनाचूर सभी है आशा, निकलत जात उमरिया ॥
सोच समझ ले अब भी मानव, आयु थोड़ी तेरी ।
वृथा समय, तू नाहीं खोए, फिर न मिले उमरिया ॥
तीर्थ शिवोम् ऐ मेरी आयु, ठहर जरा तो रूक जा ।
मैं भी साथ तुम्हारे आया, रूकती नहीं उमरिया ॥

30. अन्तर बाजा बजत निरन्तर ।
उदासीन है जीव बेचारा, सुनत नहीं जो बजत निरन्तर ॥
सुने जगत के कोलाहल को, खाए कान चला जाता जो ।
हरदम नाद प्रकट होता है, सुनत नहीं जो बजत निरन्तर ॥
प्राण क्रिया है अन्दर होती, श्वास श्वास पल पल होती है।
घटित क्रिया अन्दर न देखे, सुनत नहीं जो बजत निरन्तर ॥
साधन भजन बहुत है करता, पूजा पाठ जपे भी हरदम ।
अन्तर नाद सुने है नाहीं, सुनत नहीं जो बजत निरन्तर ॥
अन्तर नाद प्रकाश क्रिया ही, मारग राम मिलन का जो है।
अन्तरमुखता मन निर्मलता, सुनत नहीं जो बजत निरन्तर ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, नाद कृपा से ही है होता ।
कृपा बिना है जीव बेचारा, सुनत नहीं जो बजत निरन्तर ॥

31. अब प्रेम हुआ जो राम से है, पल भर भी वह छूटत नाहीं ।
जब राम कृपा मुझ पर बरसे, तब आप मिले छिन के माहीं ॥
अब प्रेम की अगन जलावे है, मन तड़पे है प्रियतम के लिये।
अब आन मिलो हे राम प्रभु, है चाव बसा मन के माही ॥
अब नैना लागे वाट पर हैं, पलभर का चैन नहीं मुझको ।
है जाग उठी पीरा मन में, अब आन मिले छिन के माहीं ॥
प्रियतम आन मिले जो मोहे, पल भर विलग न होऊं ।
पड़ी रहूँ चरणों पर ही मैं, जो राम मिले मन के माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् मैं सद्गुरु पाया, मिला उपाय मिलन का ।
अब तो प्रियतम संग विराजे, मिलता है हरि छिन के माहीं ॥

वंदना

32. हे प्रभु सुन्दरता सब तेरी।
कानन पर्वत नदी सरोवर, प्रतिमा है सब तेरी ॥
ज्योति ज्योत समाया तू ही, प्राण शक्ति भी तू ही ।
तेरे बिना नही कुछ किरिया, छाया है सब तेरी ॥
तू ही जग में कण कण व्यापक, पत्ता हिले न कोई ।
सभी रूप तेरे ही परगट, सत्ता है सब तेरी ॥
जीव करत है अहम् निरर्थक, पास नहीं कुछ भी है।
तू ऊठत है तू ही बैठत, किरिया तो सब तेरी ॥
अहम करे और चक्कर काटे, आवागमन न छूटे।
तेरी कृपा बिना न छूटत, मौज ही तो सब तेरी ॥
अगम अपार अलख हे स्वामी, तीर्थ शिवोम् पुकारे।
तू ही पालनहार जगत का, लीला है सब तेरी ॥

33. सर्व वियापक सर्व नियन्ता, घट घट मेरा स्वामी ।
पंच तत्व है पैदा कीने, ऐसा मेरा स्वामी ॥
त्याग जगत की आशा तृष्णा, मन भटकाओ नाहीं ।
दीन दयालु मेरा प्रियतम, ऐसा मेरा स्वामी ॥
सदगुरुदेव कृपा बिन नाहीं, लाभ प्रभु का होवे ।
किरिया ही से लाभ कमावे, ऐसा मेरा स्वामी ॥
अलख अलौकिक प्रियतम मेरा, लीला अजब रचाई।
हर घर बैठा मेरा प्रभुजी, ऐसा मेरा स्वामी ॥
भाव बिना भक्ति है विरथा, राम न परगट होवे ।
भाव भक्ति से ही वह रीझत, ऐसा मेरा स्वामी ॥
तीर्थ शिवोम् भया आनन्दित, सिमरन राम करे वह ।
लेत मिलाए अपने माहीं, ऐसा मेरा स्वामी ॥

प्रकीर्ण

34. पवन गति अन्तर तन माहीं ।
जब रूक जाती वह अन्दर में, हर लेती जीवन छिन माहीं ॥
जीव है फिरता माया मद में, समझत नाहीं पवन गति को ।
जब यह होती क्रिया रहित है, प्राण तजे वह छिन के माहीं ॥
पवन है सारे जग में व्यापक, पवन बिना कोई घट नाहीं ।
पवन बिना किरिया को नाहीं, पवन उखाड़े छिन के माहीं ॥
जीव पवन का पुतला बन्या, प्रगट पवन सो तन की किरिया ।
जब लगि पवन क्रिया है, तब तक सांस की किरिया छिनछिन माहीं।
पवन को रोके आए वश में, भजन बिना यह होवत नाहीं ।
पवन है वश तो जगत है वश में, भजन करें हर छिन के माही ।
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, पवन गति तुमरी है न्यारी ।
जगत बनाए जगत समाए, यह सब होवत छिन के माहीं ॥

35. कामना मुझको सताती जगत की, सुख भोग की ।
संचय जग के साधनों की, और तृष्णा लोभ की ॥
मैं बना इसका हूँ कैदी, है नचाती जगत में।
कर उदय तृष्णा जगत की, कैदी बनाती मोह की ॥
कामना पैदा है करती, जगत सन्मुख जीव के ।
फिर रूलाती और भगाती, है वह कारण लोभ की ॥
कामना ही जगत है, इच्छा बिना न जगत है।
है उसे फिर वह लुभाती, हेतु बनती शोक की ॥
कामना कैसे यह छूटे, मन हो निर्मल जीव का।
कामना जब दूर हटती, हेतु वही सुख भोग की ॥
है पड़ा शिवोम् अब तो, तेरे चरणों में प्रभु ।
दूर मेरी कामना हो, दूर इच्छा भोग की ॥

36. है ठोक बजा शिवओम् लिया, जग में कोई भी सार नहीं ।
स्वारथ ही स्वारथ भरा हुआ, अपना कोई भी यार नहीं ।
निज हित में सब हैं लगे हुए, न पूछे कोई किसे रहा।
इस स्वारथ सागर का जग में, है कोई आर न पार नहीं ॥
घर घर में झगड़े होते हैं, है भाई से भाई लड़ता ।
भारत की तो मरयादा क्या, है कोई किसे विचार नहीं ॥
पत्नी न माने पति मेरा, है पति भी खाता घास कहीं ।
है आपाधापी मची हुई, ऐसा तो है घर बार नहीं ॥
गीता उपदेश हैं सब भूले, स्वारथ है नाच रहा खुलकर ।
है भारत का होने वाला क्या, है शुद्ध विचार अहार नहीं ॥
है तीर्थ शिवोम् हुआ चिन्तित, है बुरी दशा अब जनता की ।
भगवान भरोसे है गाड़ी, है धर्म अधर्म विचार नहीं ॥

37. त्यागता हूँ जगत को, संन्यास हूँ मैं ले रहा।
अब साधना ही काम है, संन्यास हूँ मैं ले रहा ॥
मित्र है कोई न मेरा, और न दुश्मन कोई ।
मित्र सबको मानकर, संन्यास हूँ मैं ले रहा ॥
छोड़कर परिवार अपना, और सब व्यापार भी ।
जग मेरा परिवार है, संन्यास हूँ मैं ले रहा ॥
कर दो क्षमा गलती जो मेरी, हो गई नादान से ।
अब मैं सेवक सबका हूं, संन्यास हूँ मैं ले रहा ॥
जगत मिथ्या छोड़ना और दर्शन राम का ।
अब तो यह ही काम है, संन्यास हूं मैं ले रहा ॥
शिव ओम् अब तो राम में, ही मन लगाओ अपना ।
देकर यही उपदेश अब, संन्यास हूं मैं ले रहा ॥

प्रेम

38. मैं तो राम दीवानी होई, राम ही राम रटत हूं।
राम बिना कछु सूझत नाहीं, राम ही पंथ धरत हूं ॥
राम शरण मन लागा मोरा, राम ही जीवन अब तो ।
मैं तो हो गई राम पिया की, न उसको विसरत हूँ ॥
राम सदा ही संग है मेरे, हिरदय सतत् वह रहता ।
ऐसा राम कहां मैं छोडूं, हरदम नाम जपत हूँ ॥
राम ने किरिपा अनुपम कीनी, जग जंजाल छुड़ाया।
चरणी अपनी मोहे राखा, न मैं राम तजत हूँ।
तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रियतम, सदा रहो संग मेरे ।
तोहे देखूं तेरी सेवा, दूजा नाहीं तकत हूं ॥

39. क्या तीर चलाया कैसा है, तिरछे नैनों ने क्या कीना ।
है हिरदय मोरा बिंध दीना, हे श्याम है तूने क्या कीना ॥
जब वंशी तान मैं सुनती हूं, धड़क कलेजा जाता है।
अखियां है मस्ती भर जाती, है तूने जादू क्या कीना ॥
तेरी तो चाल निराली है, जो मोहित करती मन मेरा ।
अब किसे बताऊँ मैं जाकर, जो हाल है तुमने कर दीना ॥
अब सूझत नहीं सिवा तेरे, है ऐसी दशा भई मन की।
अब श्याम ही श्याम पुकारत हूँ, है अन्तर प्रेम से भर दीना ॥
अब काय करूँ और जाऊँ कहाँ? दिल लागत नाहीं श्याम बिना।
हूँ रोवत तेरे विरह में, है तुमने मुझको क्या कीना ॥
शिवओम् पुकारत गली गली, खोजत फिरती हूं प्रियतम को ।
है श्याम समाया मन अन्दर, घर बार मेरा छुड़वा दीना ॥

40. प्रभु की आस लगी है मोहे जगत आस न पकड़ी।
फिर भी जग है पीछे लागा, विषयन माही जकड़ी ॥
पापी मनवा दुख देवत है, चंचल बना भटकता।
पड़ा रहत घर बार के माहीं, नून तेल और लकड़ी ॥
मन को कैसे मैं समझाऊं, वह तो समझत नाहीं ।
इधर उधर है रहत डोलता, आवत नाहीं पटड़ी ॥
मोहे जग आशा तो नाहीं, प्रभु प्रेम की आशा ।
कौन मिलावे प्रियतम मेरा, हिरदय प्रीत है अटकी ॥
अब तो आन मिलो हे प्रियतम, मेरा और न कोई।
जाके आगे जाय पुकारूं, आस तेरी है पकड़ी ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे प्रियतम हिरदय तुमी समाए ।
अब तो अन्तर तुमी विराजो, प्रेम तेरे में जकड़ी ॥

41. प्रभु किरपा है मेघ समाना।
बरसे प्रेम सदा दिन राती, करत जगत कल्याना ॥
अमृतधारा बहे निरन्तर, भगती सर्व प्रसारित ।
जो जन जैसा हो अधिकारी, ताही मिले अजाना ॥
प्रभु बड़ा ही दीनदयाला, दीनन करत अनुग्रह ।
गुरु दिखाए मारग प्रभु का, जीव फिरे दीवाना ॥ ।
मनवा पड़ा रहा गुरु चरणी, मारग यही प्रभु का।
प्रेम हृदय मन में वैरागा, मोक्ष मिले परवाना ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, शरण तुम्हारी पकड़ी।
किरिपा बिना मिले न कछु भी, कृपा देत निरवाना ॥

42. मैं तो भटक भटक कर हारी, पर मैं ठौर न पाई।
किरपा चमकी हुआ सवेरा, तब अपने घर आयी ॥
अब तो लगी गुरु की चरणी, इच्छा शुभ है जागी।
मन भटकावन मन से भागी, मन आनन्द समायी ॥
सदगुरुदेव कृपा है कीनी, जाग उठी जगदम्बा ।
लीला करती अजब अलौकिक, मन शुद्धी है पायी ॥
देख देख कर उसकी किरिया, मन हर्षित है होता।
कर्म वासना क्षीण होत है, वृति निर्मल जायी ॥
अब तो मन आनन्द समाया, तृष्णा मोह न व्यापे ।
माया परदा तनु हुआ है, अन्दर सूखी जायी ॥
तीर्थ शिवोम् है मन का अब तो, भाव ही बदल गया है।
राम नाम व्यापे जग माही, दुविधा दूर है जायी ॥

43. प्रीत लगी प्रियतम सों अब तो, प्रियतम ने अपनायो।
मन की तृष्णा सभै मिटाई, जीवन सरल बनायो ॥
सुख की वर्षा होवन लागी, अन्तर राम समाय ।
अब तो राम ही दीखत सब जग, अपना आप दिखायो ॥
राम नहीं है भूलत मन सो, सघन ध्यान ही कीना ।
सुख सागर में नाव हमारी, जीवन धन्य बनायो ॥
प्रीत तो है प्रियतम ही जाने, मैं आनन्द मनाऊं।
जगत पसारा छूटा सब ही, मो को मुक्त करायो ॥
मन आनन्द समाया रहता, चिन्ता शोक है भागे ।
वाह वाह मेरे प्रियतम् प्यारे, क्या कौतुक उपजायो ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे प्रभु प्रियतम्, वारी जाऊं तुम पर।
मन निर्मल है कीना मेरा, मारग राम लगायो ॥

44. प्रभुजी, प्रियतम् प्राण अधारे।
भाव भक्ति प्रकटे मन माहीं, तू ही काम सवारे ॥
दीन दयाल तेरी हूं शरणी, सकल तेरे ही आगे ।
सिमरन नाम करूं दिन राती, हरदम सांझ सवारे ॥
चरण हृदय में धारू तेरे, तुमसे प्रीत है लागी ।
मन में अब तो बसे है तू ही, तुम ही एक सहारे ॥
अनत कृपा सदगुरु ने कीनी, मारग प्रेम दिखाया।
प्रेम वियोगन रंग राती हूं, तू तारे या मारे॥
हूं मतवाली नाम तेरे की, चेतन सदगुरु दीना ।
हर पल नाम नशे में रहती, नाम ही जगत पसारे ॥
तीर्थ शिवोम् शरण हूं तुमरी, दूजा ठौर है नाही।
यह जीवन तुमरे ही अर्पण, न कुछ पास हमारे ॥

45. अमृतधारा बरसे हर दम, प्रियतम किरपा कीनी।
तन मन तृप्त भया है अब तो, निधि अमोलक दीनी ॥
सदगुरु मारग प्रेम दिखाया, तो मैं प्रियतम पाया।
किरपा दृष्टि है सुख उपजे, चिन्ता है सब लीनी ॥
सीमा टूटी, अनत भयी मैं, एक ही का सुख पाया।
मुझको अनुभव दिया अलौकिक, सारी दुविधा छीनी ॥
भक्ति भाव हृदय उपजाया, कर्म हटाए मन से।
अब तो मनवा निर्मल होया, किरपा मो पह कीनी ॥
काहे जीव है भटकत जग में, जहां लेश सुख नाहीं ।
राम कृपा ही एक सहारा, सूझ मुझे यह दीनी ॥
तीर्थ शिवोम् है भोले मनवा, अब आनन्द मना रे।
बीती रेन सवेरा होया, अमृत वर्षा कीनी ॥

46. प्रभु मेरे मैं वैरागन होई।
तेरे बिन मन लागत है न, हूं मैं त्यागन होई ॥
तुमसे प्रीत लगी है प्रियतम, तेरी याद सतावे ।
तेरी ओर ही मनवा जाए, गति यह मेरी होई ॥
सदगुरु किरपा कीनी मो पर, तुमसे नेह जगाया।
सबसे ऊंचा सुख सुमिरन का, उसमें ही रूचि होई ॥
सत उपदेश श्रवण मैं कीना, मन निर्मलता पाई।
तेरे रंग में रंग गई ऐसी, जग की तृष्णा खोई ॥
तेरे सुमिरन में मन लागा, तात पराई छूटी।
मन तो हरदम मस्त बना है, मन चंचलता खोई ॥
तीर्थ शिवोम् है प्रियतम सैंया, अन्तर तुमको देखूं ।
माया ममता छूटे सब ही, मगन अनन्द में होई ॥

47. गुरुजी! मैं प्रियतम कब पासी ।
सखियां है सब सुख से सोई, मोहे करत वह हांसी ॥
जिनका पी अपने घर आया, वह सब लेत बधाई ।
मैं प्रियतम विरह में तड़पूं, मुख पर रहत उदासी ॥
दीन दयाला मेरा प्रियतम, दीनन दया करत है।
मो सम दीन न कोई जग में, कब किरपा बरसासी ॥
अवगुण भरी कुटिल नारी हूं, पापन में रत् रहती।
परम उदार है मेरा प्रियतम, किरपा कर अपनासी ॥
छिन में काटे वह दुख मेरा, शक्ति अपरम्पारा।
अब तक क्यों है नजर न मो पर, कब वह गले लगासी ॥
तीर्थ शिवोम् रैन कब जाये, कभी सवेरा होसी ।
तरस रही हूँ पिय मिलन को, अपना मुख दिखलासी ॥

48. है प्रेम बदरिया बरस रही, और भीग रहा है तन सारा।
मन में आनन्द अलौकिक है, है छूट गया है संसारा ॥
हर ओर है हरियाली छाई, हैं पुष्प खिले भाँति भाँति ।
है रिमझिम मेघा बरस रहा, और खिल जाता है मन सारा ॥
मन शोक नहीं और मोह नहीं, है प्रेम छलकता सभी जगह ।
अब मित्र नहीं और शत्रु भी, मन मस्त प्रेम का है मारा ॥
अब सारा जग ही है अपना, है नहीं पराया कोई भी ।
मन भरा जगत से ऐसा है, कि भूल गया है जग सारा ॥
है प्रेम उमड़ता हर दम है, है प्रियतम रहता पास मेरे ।
है अगन वियोग बुझी सारी, मन मस्त हुआ है मतवारा ॥
शिव ओम् आनन्द भरा अब है, गुरुदेव कृपा परगट मन में।
अब तो सुख ही सुख है छाया, और बदल गया जीवन सारा ।।

49. प्रेम नगर की वासी गोपिन, श्याम नगर में आई ।
श्याम रंग में हिरदय रंग कर, मतवाली हो आई ॥
मन में प्रेम समाता नाहीं, उछलत उछलत जाए।
श्याम रंग तो चढ़ा है ऐसा, श्याम रूप बन आई ॥
जगत रूप सब गौण हुआ है, श्यामहि दृष्टि जाए।
श्याम बिना न सूझे कछु भी, श्याम ही है मन भाई ॥
ऐसो हाल भया गोपिन का, श्याम बिना मन तड़पे ।
श्याम मिलन के ताई मनवा, रहत सदा अकुलाई ॥
अब तो उठत बैठत हर दम, रटन श्याम की लागी ।
श्याम बसा है मन के माही, याद है बनी रहाई ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो घनश्यामा, तुम में ही मन लागा।
आन मिलो अब दर्शन दीजो, तुम पर यही दुहाई ॥

50. मैं तो हुई गई बावरी, धाम राम चली।
पग पग खोजत राम को, ढूंडत गली गली ॥
कुल छोड़ा मरयादा छोड़ी, छोड़ दिया जग सारा ।
अब तो केवल राम ही भाया, खिलती कली कली ॥
उच्च शिखर पर रंग महल है, जा निकसी वहां जाय।
निर्गुण शिला वहां है थापित, हरदम भरी भरी ॥
रोके न कोई टोके कोई न, मतवाली भई ऐसी ।
अब तो पी की सेज विराजूं, आनन्द घरी घरी ॥
जग छूटा और जगत पसारा, चिन्ता शोक न कोई ।
आतम से है आत्म सुखी अब, रहती छकी छकी ॥
तीर्थ शिवोम् आनन्दित होई, प्रियतम सन्मुख मेरे ।
मैं प्रियतम में, पी है मुझमें, हर दम हरी भरी ॥

51. आरत भाव हुआ है जागृत, राम मिलन के ताई ।
नींद न आवत रजनी मोहे, चैन हृदय में नाहीं ॥
विरह बाण लगा उर अन्दर, तड़पत कल न पड़त है।
हर दम पंथ निहारू प्रियतम, तड़प हृदय के माहीं ॥
विष सम विषय लगत है मोहे, जगत है मुझे बुलावे ।
मन में तो गोविन्द समाया, भूख विषय की नाहीं ॥
कृष्ण मुरारी सुनो हमारी, विनय करूं हूँ तो से।
आरत भाव करो अब पूरण, इच्छा दूसर नाहीं ॥
तीर्थं शिवोम् मेरे भगवन्ता, शरण तुम्हारी में हूँ।
अरज गुजारूं पायं पड़ूँ हूं, तुम बिन दूजा नाहीं ॥

सीख

52. जगत विसैला मारक घातक, ता पर खांड चढ़ी है।
भूला जीव जगत में जाए, समझे नहीं घड़ी है ॥
जीव न जानत खाय रहा विस, मीठा करके माने।
होय रहा मतवाला विषयन, ऐसी भांग चढ़ी है।
अब तो सोच समझ मन मूरख, काहे तू भरमाया।
प्रियतम रहा बुलाय तोहे, जागन आई घड़ी है ॥
यह जग तो बंधन का कारण, जकड़ जाल में लेता।
त्याग तू इसकी माया ममता, तुमको काय पड़ी है ॥
निजानंद जो रूप है तेरा, उसे पछानत नाहीं ।
तू तो जग विषयन में लागा, जल में नाव पड़ी है ॥
तीर्थं शिवोम् उठो हे प्यारे, अब त्यागो निद्रा को ।
गुरू कृपा का आश्रय लेवे, निकले नाव अड़ी है ॥

53. सादगी में जो मजा है, वह नहीं पकवान में।
जग से अपना मन हटा, और देय लगा भगवान में ॥
देखता औरों को करते, मन तेरा ललचाए है।
पर मजा अंतर में तेरे, धन में न धनवान में ॥
प्रेम कर अंतर में पैदा, खुश तेरा भगवान हो ।
तू तो ऐसा जम के लागा, खेती में खलीहान में ॥
जो करे सेवा करे तू, मन में सिमरन राम हो ।
हाथ सेवा, मन प्रभु में, डूब न अरमान में ॥
अब तक बिगाड़ा है समय, दुनिया के कामों में भला ।
है उमरिया निकली जाए, बीतती अनुमान में ॥
शिव ओम् तुझको क्या कहूं? है क्यों बना नादान तू ।
राम सेवा मन लगा तू, न गवां अंजान में ॥

54. परखा देखा सब संसारा, सार न कोई पाई।
यह तो केवल एक दिखावा, छिन छिन बदलत जाई ॥
एक प्रभु है नित्य जो बनया, न टूटे न फूटे।
सदा एक रस, एक समाना, ता में खोट न पाई ॥
अंतर में तम छाए रह्या है, प्रभु है दीखत नाहीं ।
अनुभव होत सत्य संसारा, जो केवल दिखलाई ॥
अंदर झांको, अंदर देखो, कर्म तुम्हारे कैसे।
अंतर होत प्रभु है, फिर भी, देत नहीं दिखलाई ॥
मन निर्मल होते ही प्रभुजी, अंतर में दिख जाए।
माया का आवरण हटे जब, प्रकट प्रभु दिखलाई ॥
तीर्थ शिवोम् है माया ऐसी, प्रभु न देखन देवे।
लगा रहे जग में ही मनवा, अधिक अधिक अधिकाई ॥

55. सोई कामिनी जाग री, मन कर तू सिंगार ।
न जाने पी आए कब, नहीं तो होत बिगार ॥
जग में न भरमाए तू, लेवत अंग जलाए।
जग को ऐसा जान तू, जलत जैस अंगार ॥
सद्‌गुण अंतर होय बिन, पी तो रीझत नाही।
सद्‌गुण ही सिंगार है, पकड़े क्यों अंगार ॥
तीर्थ शिवोम् तू जाग री, तम निद्रा को त्याग।
अंतर हार सिंगार कर, क्यों बनती अंगार ॥

56. जब राखनहार प्रभु होवे, फिर मारनहार नहीं कोई।
जब सिर पर हाथ प्रभु होवे, फिर ताड़नहार नहीं कोई ॥
जब पालनहार प्रभु होवे, फिर कमी क्या, किस बात की है।
मन शौक रहित तब हो जाता, फिर जग पह भार नहीं कोई॥
जब तक है राम रमा अंदर, और क्रियाशील है बना रहे।
तब तक जीवन धारण होता, होती है हार नहीं कोई ॥
बस राम ही साथी है साचा, पग पग पर रक्षक है तेरा।
तू चिन्ता काहे करता है, है पारावार नहीं कोई ॥
इक राम समर्पण हो जा तू, और मस्त रह मन अपने में।
लीला उसकी अंतर देखे, है आर न पार नहीं कोई ॥
है तीर्थ शिवोम् हुआ शरणी, मन जात न दूजे कहीं कभी।
मन आशा तृष्णा रहित हुआ, है शत्रु यार नहीं कोई ॥

57. बन ठन बैठी पिया के कारण, सोए गई जग माहीं ।
प्रियतम आयो, निकल गयो है, होश तुझे कुछ नाहीं ॥
साचा प्रेम निहारत रहता, लगा पंथ ही हरदम ।
पल भर झपकत नाहीं नयनां, प्रियतम हिरदय माहीं ॥
माया बाण चलाया ऐसा, भूल गई प्रियतम को ।
सुध बुध सारी बिसर गई तू, मोह जगा जग माहीं ॥
अब तक होश न आया तुझको, सुख दुख में मन लागा।
निद्रा झटक, त्याग दे माया, सुख तो अंतर माहीं ॥
पीय तेरा आनंद स्वरूपा, चेतन मुक्त अनंता ।
सुख सागर है प्रेम प्रदाता, मांग उसी के पाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् गई तू काहे, भव जल प्यास मिटाने।
जग जंजाल है उलझी ऐसी, निकल सकत है नाहीं ॥

58. देव जगाए, देव बने न, क्योंकर जागे देवा ।
साधन बिना देव न जागे, कैसे पावे मेवा ॥
अंतर शत्रु मार भगाओ, चाहे देव जगाना।
इच्छा तेरी तब हो पूरी, अंतर जागे देवा ॥
राम प्रभु की भगती करता, वा से जग को मांगे ।
मनोकामना होत है पूरन, पर न जागत देवा ॥
जगत है तेरे अंदर बैठा, देव से जग ही मांगे।
अंतर जग जो निकले बाहर, तब जागेगा देवा ॥
शरण देव की हो जा अब तो, जैसा चाहे राखे ।
जब तक नहीं समर्पित होता, दर्शन देत न देवा ॥
तीर्थ शिवोम् समझ रे मनवा, अब तो छोड़ जगतको ।
कैसी इच्छा, तृष्णा कैसी, जाग उठेगा देवा ॥

59. काया अंदर साचा राम अधारा ।
काया तो केवल माया है, राम ही सिरजन हारा ॥
सपने में धन मिले जो भारी, निराधार वह होवे।
तेसे माया माहीं काया, नाहीं कोई सारा ॥
जग मिथ्या केवल है भासित, दृश्य ज्यों दर्पण माहीं ।
राम राम केवल आधारा, जो हैं अपरम्पारा॥
संग जीव के चाले कुछ न, काहे तू लिपटाना।
सिमरन राम हरि गुण गाओ, हो जाए निस्तारा ॥
राग द्वेष और निन्दा उस्तति, दोनों सम कर जानो ।
हरि नाम ही पार लगाए, ता का सकल पसारा ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, एक हरि ही व्यापे ।
बाकी खेल सभी माया का, माया का परिवारा ॥

60. नाम नहीं विश्राम नहीं, झूटा अभिमान किए जाता ।
विषयन माही मन जाता है, झूठा अभिमान किए जाता ।।
सामर्थ्य नहीं है पास कोई, माया का बनया पुतला है।
है माने अपनी चेतनता, झूटा अभिमान किए जाता ॥
तनिक कमाया जग में कुछ भी, गर्व किया अति भारी ।
निज स्वरूप भूला जग माही, झूटा अभिमान किए जाता ॥
धन परिवार सकल सम्पत्ति, भ्रमित रहा इन ही में ।
मद में चूर हुआ तू ऐसा, झूट अभिमान किए जाता ॥
प्रभु भुलाया, चैन गंवाया, हाथ न कुछ भी आया।
काहे दुखी करे है जीवन, झूटा अभिमान किए जाता ॥
तीर्थ शिवोम् समझ ले मनवा, सुख तो केवल शरणी
क्यों भरमाया जग में विरथा, झूटा अभिमान किए जाता ॥

61. गर्व करे क्यों बावरे, मन में तू पछताएगा।
विरथा विषयों में तू उलझा, जीवन यूं ही गंवाएगा ॥
जग तो केवल आवन जावन, सदा यहां न रहना।
रहा मान घर जिसको अपना, छोड तू इक दिन जाएगा॥
आया था मन साफ करने का, उल्टे जग में भूला ।
कर्म किए तू जाता संचित, समझ तेरी कब आएगा ॥
सद्गुरु शरण, नाम की सेवा यही उपाय मुक्ति का ।
इसको छोड़ जगत में लागा, रोवत ही तू जाएगा ॥
जीवन छोटा, बहुत ही छोटा, काम तेरा बहु भारी है।
मन निर्मलता, प्रेम प्रभु का, कर यह तू कब पाएगा ॥
तीर्थ शिवोम् संभल जा अब भी, नाहीं कुछ भी है बिगड़ा ।
शरणी लाग, राम की सेवा, मन आनंद तू पाएगा ॥

62. मनवा राम तू क्यों बिसराया, जग में उलझ रहया ।
सुख दुख बहुत ही पाया, नाम न सिमर रहया ॥
तन तेरा माटी का भाण्डा, माट कांच जो बन्या ।
इक दिन यम सो काम पड़ेगा, चाम को छोड़ गया ॥
क्यों न समझे मूरख मन में, तू जग में भरमाया।
जग तो साथ चलेगा नाही, यूं ही भरम रहया ॥
धन जोबन दारा सम्पत्ति, सब है छाया माया ।
तू इठलाता फिरे जगत में, अकड़त जात रहया ॥
संग में भगती राम ही चाले, जो है सत्य सरूपा।
फिर काहें न जपे नारायण, विरथा भ्रमित रहया ॥
तीर्थ शिवोम् समझ है मनवा, उमर बिता न ऐसे ।
छिन छिन पल पल घटती जाए, समझत नाहीं रहया ।

63. भूले फिरे है क्यों तू मनवा, जग के झूठे काम।
यह जग तो है माया नगरी, साच एक हरि नाम ॥
अब भी नहीं है बिगरा तेरा, जो दिन तेरे बाकी ।
ता में नाम जपे नारायण, जावेगा हरि धाम ॥
जगत तो सपने नाईं दीखत, माया खेल खिलौना ।
सिमरे सकल मनोरथ पूरे, पावेगा विश्राम ॥
कंचन काया मन भरमाया, इक दिन जावन हारी।
काहे गरत गिरा तू मनवा, काम न आवे दाम ॥
संग सदा ही रहत है तेरे, राम ही साचा साथी।
राम सिमर ले राम सिमर ले, राम नाम सुख धाम ॥
तीर्थ शिवोम् समझ ले मनवा, पकड़े राम सहारा।
राम ही पार करेगा नैया, अब तक जो बेकाम ॥

64. जग विष जाए हरि-कृपा से, राम भजन तू कर ले।
यह ही औषध विष मारन की, सिमरन हरि तू कर ले ॥
तू बन्या विरथा में चंचल, भला बुरा न चीह्ने।
छिन छिन जीवन बीता जाए, सिमरन हरि तू कर ले ॥
जग तो छोड़न वाला नाहीं, जकड़ है तोहे रखा।
जग छोड़न का यही उपाय, सिमरन हरि तू कर ले ॥
हे मूरख, औषध ले ऐसी, माया तेरी छूटे।
ऐसी औषध एक ही जग में, सिमरन हरि तू कर ले ॥
धन यौवन छाया सम चंचल, यह तो साथ न जाए।
जमा करन को साथ का खर्चा, सिमरन हरि तू कर ले ॥
तीर्थ शिवोम् यह जाति पाति, धन वैभव परिवारा।
साथ न चाले तेरे कुछ भी, सिमरन हरि तू कर ले ॥

65. सुदंर आकर्षक है काया, दर्शन राम न पाया।
दर्शन बिना मेरा तो मनवा, चैन नहीं सुख पाया ॥
तीखे नयना, गौर वर्ण हूं, लाभ है तभी इनका ।
रीझे पियां जो मेरे ऊपर, नहीं तो बोझ उठाया ॥
अंतर सुदंरता प्रभु रीझे, सद्गुण धारण होवे ।
हार सिंगार प्रभु न भावे, सुंदर मन ही भाया ॥
योग साधना करे निरंतर, प्राणों को तू खींचे।
करे आकाश गमन विभूति, प्रभु को जीत न पाया ॥
प्रभु कृपा कर देह यह दीनी, चेतन किया प्रवाहित।
ताहि सिमरन कर तू मनवा, ताही में सुख पाया ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो है मनवा, साथ देह न जाए।
हृदय भाव हरि - सिमरन ही से, जगत छूट यह पाया ॥

66. गुरु देवे जो नाम अपारा, मन आनंदित होई।
चेतन नाम करे मन चेतन, मन आलोकित होई ॥
गुरुदेव की वाणी सांची, सांच करे उजियारा ।
सांचे सांच मिलाए देती, माया दूरी होई ॥
करे अमर जो भव जल डूबे, शोक मोह सब जाए।
जगत विलीन करे सन्मुख सों, हुई अविद्या कोई ॥
पावे मारग नाम से केवल, कलियुग यही है लीला।
माया जाए लीला प्रकटे, लीन शब्द मन होई ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, नाम ही ज्ञान उपाय ।
चेतन नाम ही पार उतारे, बाकी विरथा होई ॥

67. मनवा तू पछताएगा, समय निकल जब जाएगा।
अब तक तो तू जग में लागा, जग में धोका खाएगा ॥
जग में नहीं किसी का कोई, सब कोई स्वारथ लागा।
तेरा नहीं है कोई अपना, समझ नहीं तू पाएगा ॥
मिध्या जग है होत प्रवर्तित, रूप बदलता रहता है।
जा वस्तु से मन है लागा, वो तो बदल ही जाएगा ॥
प्रभु ही केवल थिर है जग में, जिसने जग उपजाया है।
सुमरन कर तू एक प्रभु का, तो ही तू सुख पाएगा ॥
समझाए रहा हूं तुमको, इसमें ही तेरा हित है।
नहीं तो भवसागर ही डूबा, फिर फिर गोते खाएगा।
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, जगत किसी का है नाहीं ।
नाम सिमर ले जग से हटकर, अंतर आनंद पाएगा ॥

68. लीला तेरी अपरम्पारा।
भक्तन को तो पार उतारे, निन्दक अग्नि डारा ॥
भक्तन मन आनंद मनावें, उतर गए सब पारा।
पापी डूबे भव जल माहीं, नाहीं मिलत किनारा ॥
पापिन से राखे प्रभु मोरा, हाथ देय सिर ऊपर।
भक्तन को लवलेश नहीं दुख, निर्मल रहत विचारा॥
प्रभु से नेह जगे भक्तन में, रहते लीन भजन में।
पापी अंध कूप में डारा, करता जगत विचारा ॥
लीला तेरी अजब अनूठी, रागद्वेष को नाही ।
जैसे कर्म करे है प्राणी, वैसा फल निस्तारा ॥
तीर्थ शिवोम् भजन कर मनवा, भजन अलोकित करता।
भजन छुड़ाए भव बंधन से, भजन दिखात किनारा ॥

69. अजब नाम है अजब नाम है, अजब तेरा है नाम।
झूठी दुनिया झूठी दुनिया, है दुनिया बेकाम ॥
नाम है पार उतारन हारा, भव सागर के पार।
दुनिया तो है खोखी खोटी, है दुनिया बेकाम ॥
नाम जपे तो मन का चंगा, नहीं करे जो होवे गंदा।
गंदी दुनिया, गंदी दुनिया, दुनिया है बेकाम ॥
भले लोग भक्तन हैं तेरे, पड़े रहें वह चरनन तेरे।
दुनिया में तो सार न कोई, है दुनिया बेकाम ॥
नाम तेरे आनंद अपारा, सिमरे नाम न होत खवारा।
दुनिया तो दुख देवन हारी, है दुनिया बेकाम ॥
तीर्थ शिवोम् नाम मन लागा, पावे अनंद अनोखा।
छोड़ी दुनिया, छोड़े टंटे, यह दुनिया बेकाम ॥

70. दीन दयाल प्रभु है मेरा, दिन राती गुण गाओ।
जग जंजाल है काटन हारा, ता में ध्यान लगाओ ॥
दूर करे जीवों के दुख को, सुख का वही प्रदाता।
मन निर्मलता करत प्रकाशित, ताही में मन लाओ ॥
शरण प्रभु की ग्रहण करे जो, निर्भय विचरण करता।
सकल सिद्धियां होत उपस्थित, नाम उसी का गाओ ॥
जा मन सिमरण नाम प्रभु का, किरिया होवत परगट।
अजब अनोखे करे तमाशे, अंतर उसे जगाओ ॥
जो पावे सतगुरु की किरपा, नाम रसायन पावे।
सोहम नाद है परगट अंदर, मन में ही सुख पाओ ॥
तीर्थ शिवोम् मिले गुरू पूरा, ता जन है बड़ भागी।
सेवा भगती करो अनूठी, जग से पिण्ड छुड़ाओ ॥

71. जग में जो तू पड़ा है, यह तो बुरा नहीं है।
सिमरन हरि करे न, बस भूल तो यही है ॥
किस काम को तू आया, वह काम तो करे न ।
विरथा समय बिगाड़े, बस भूल तो यही है ॥
हिरदय में भाव नाहीं, जग के है पीछे भागे ।
बाहर जो खोजे सुख को, बस भूल तो यही है॥
अब तो संभल जा प्यारे, सिमरन प्रभु का कर ले।
पर तू लगा जगत में, बस भूल तो यही है ॥
मन वश में कर ले अपना, जो भागता जगत में।
पर तू नहीं है सुनता, बस भूल तो यही है ॥
शिव ओम् मैं पुकारूं, सिमरन करे प्रभु का।
जग तो जगत में लागा, बस भूल तो यही है ॥

72. सुख को खोजे क्यों तू जग में, जग में तो सुख नाहीं ।
विरथा तू भरमाए रहया है, तेरे अंदर माहीं ॥
क्यों नहीं खोजत अन्तरमन में, भटकत फिरे है जग में।
अन्दर झांके, अन्दर दीखे, प्रभु तो मन के माही ॥
जग प्रपंच है मिथ्याचारी, रहत भ्रमाए सदा ही।
मृगतृष्णा की नाईं भासित, क्यों मन जग में जाहीं ॥
राम भजे सुख उपजे अंतर, सदा आनंदित रहता।
ममता तृष्णा छोड़ जगत की, सिमरन मन के माहीं ॥
अंतर गति तो तेरी होवे, राम सिमरया जाए।
सब व्यौहार जगत से न्यारा, सुरती अंदर माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, जीवन यूं ही गंवावे ।
आशा छोड़ जगत की ममता, सुख पावे मन माहीं ॥

73. घूंघट ओढ़ के बैठी सजनी, पीया देख न पाती।
कौन उठाए घूंघट छोड़े नाहीं, रखा पकड़ है कस के ॥
वह तो घूंघट नाहीं, रखा पकड़ है कसके ।
नहीं हटाना चाहे उसको, जग में डूबी जाती ॥
प्रभु उठाए घूंघट उसका, अहम तो आड़े आता है।
प्रभु शरण का पकड़ सहारा, चरणों में है न जाती ॥
ऐसी सजनी कुलटा नारी, अपना आप गंवा बैठी ।
सुख दुख पाती रहती जग में, घूंघट नहीं उठा पाती ॥
तीर्थ शिवोम् है एक सहारा, नाम हरि सिमरन कर ले।
घूंघट तेरा उठ जाएगा, तू जो नहीं उठा पाती ॥

74. क्यों तू भटकत इधर उधर है, चल तू अपने देश ।
भटकत भटकत थक हारेगा, घूमे देश विदेश ॥
ठौर कहीं न पाई तूने, जग में है भरमाया।
अभिनय कई तमाशे करता, करत अनेकों वेश ॥
कभी लगावे तिलक तू घूमे, कभी बढ़ावे दाढ़ी।
रूप रंग बदरंग बनावे, बनता तू दरवेश ॥
मन अपने में झांक न देखे, जहां विकार भरे हैं ।
तर्क वितर्क कुतर्क तू करता, लोगन को उपदेश ॥
कर अभिमान करे तू झगड़ा, मद में भूले फिरता ।
यह लक्षण तो साधक के न, पूजत फिरे महेश ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे साधक, सिमरन नाम हरि का ।
कृपा से मन निर्मल होवे, तेरे कटत कलेश ॥

75. सिमरन नाम है अन्तर्पूजन, अन्तर्साधन होए।
अन्तर्गुरू की लीला देखे, अंतर ही सुख होए॥
अन्तर्सिमरन गुरू कृपा से, तभी चेतना जागे।
अन्तर्पूजा शुरू जभी हो, तभी साधना होए॥
जो न समझे बात यह साधक, पुरुषारथ में लागा।
शरण गुरू की गहे नहीं वह, चेतन बाहर जाए॥
अन्तर्साधन बिना नहीं है, कर्म शुद्ध तो होता।
अंतर संचय चक्र घूमता, जग में गोते खाए॥
गुरू शरण ही है वह मारग, अन्तर्साधन खोले।
करत क्रिया मन वह है परगट, अंतर सुख उपजाए॥
तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, काहे जतन करे तू।
शरणागत हो गुरूदेव के, अंतर खेल दिखाए॥

76. सिमरन करत है राम प्रभु का, वह तो जग से छूटा।
कर्म करे मन के वह निर्मल, परदा माया टूटा॥
एक अनेक बना प्रभु मोरा, जगत रूप है परगट।
नाम रूप में जो है उलझा, वह तो बन जाता झूटा॥
दूजा नहीं समान है उसके, नाम हरि जो ध्यावे।
वह ही अंतर सुख है पावे, रहत अनंद है लूटा॥
ऊंच नीच का भेद न कोई, हरि का दर है ऐसा।
सिमरत हरि, हरि का होए, देह तो झूटा झूटा॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, हरि सिमरन तू कर ले।
हरि सिमरन सम दूजा नाहीं, दूजा सब ही खोटा॥

77. जग में जनमे मानुष पीछे, मौत का निश्चित पहले।
लगी रहे जीवन में पीछे, जनम से मृत्यु पहले ॥
फिर भी जीव है देखे जग को, छोड़न नाहीं चाहे ।
जग छोड़न तो है ही उसको, जग छोड़न तो पहले ॥
जग में रमा है ऐसे मनवा, जग से एक बना है।
जगत रूप है धारण कीना, जग है राम से पहले॥
आया था जिस काम को मानुष, वह तो भूले बैठा।
कामों विरथा व्यस्त बना वह, जानत राम न पहले ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, जग तो आवन जावन।
नाम रूप तो केवल भासित, राम है सबसे पहले ॥

78. जग के लोग चमार की भांति, लगे चाम के माहीं ।
चाम से ऊपर उठे न वह, वह तो मानव नाहीं ॥
आतम रूप जगत है भूला, कर्म करे संचय वह ।
यह मारग तो सुख का नाहीं, फिर फिर जग में आहीं ॥
ऐसे जीव तो सुख दुख लावे, जग में ही सुख माने।
जग आसक्त बने वह ऐसे, आतम लाभ न पाहीं ॥
हे मन मूरख राम सिमर तू, जो सुख पाना चाहे।
अन्तर्मुखता पाए तब ही, जग में तो सुख नाहीं ॥
कर्म करे जो सेवा समझे, कर्म न संचित होवे ।
मन ही मन आनंद मनावत, दूजा मारग नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, सिमरन सेवा कर ले।
हो आलोकित अंतर तेरा, जग तो तम के माहीं ॥

79. हरि पर दृढ़ विश्वासा होई ।
जो वह करे, है लीला उसकी, संशय मन न कोई ॥
प्राप्त हो सद्गुरुदेव कृपा जब, अंतर प्रेम भरा हो।
शंका रहित हो मनवा जब ही, तभी समर्पण होई ॥
जो चाहे जग से हटना तू, अंतर प्रेम हो परगट ।
अन्तर्मुख मनवा हो जाग्रत, रामहि सन्मुख होई॥
राम दयाला है प्रति पालक, जगत उपाए समेटत ।
ताकि इच्छा बिना न होए, मन विश्वासा होई ॥
हो जा राम शरण तू मनवा, संशय त्याग जगत के ।
सेवा प्रीति राखो मन में, रीझ राम प्रभु होई ॥
तीर्थ शिवोम् दयालु प्रभुजी, संशय सभी मिटाओ।
दृढ़ विश्वास प्रेम मन माही, सागर पार है होई ॥

80. भाई रे रसना माला कीजै ।
सांस सांस हरि का सिमरन, प्रभु में ही मन दीजै ॥
चेतन नाम तभी हो जाग्रत, रसना माला छूटे ।
नाम की लीला अंतर देखो, अंतर आनंद लीजै ॥
मुख में नाम, ध्यान जग माहीं, सुमिरन नाम यह नाहीं ।
रहे निरंतर नाम ही सुमिरन, मन को निर्मल कीजै ॥
जाका नाम वहीं मन वासा, सुमिरन ऐसा होवे।
छिन छिन पल पल नाम ही मन में, नाम ही भीगा कीजै ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, नाम का सुख है अनुपम ।
नाम दान दीजो हे प्रभुजी, मनवा वही रहीजै ॥

81. मनवा एक से तू कर प्रीत ।
दुविधा मन की सब जाएगी, लगा उसी में नीत ॥
जग तो है बालू का भवना, आए पानी जाए।
देखत ही यह गल जाएगी, बालू की यह भीत ॥
अब तक रहा भुलाना जग में, ठौर नहीं तू पाई।
कब तक दुख पाएगा जग में, अब तो जा तू चीत ॥
यह जग तो काजल कोठड़िया, तम ही तम है छाया ।
अब तो जाग उठो रे मनवा, उमरिया जाए बीत ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, यहां सदा न रहना।
सिमरन नाम हरि सुखदायक, जग को ले तू जीत ॥

82. बड़ी उमरिया बाधक नाहीं, राम भजन के ताई ।
युवा वृद्ध और बालक बनिता, सकत प्रेम प्रभु ताई ॥
प्रेम तो मन की वस्तु भाई, देह से क्या है लेना ।
रोगी भोगी जोगी सब ही, सकत प्रेम प्रभु ताई ॥
कितना भी व्यौहार जगत में, बाधक प्रेम है नाहीं ।
मन मन सिमरो नाम प्रभु का, प्रेम प्रभु के ताई ॥
यह तो सभी बहाने मन के, समय नहीं है मिलता।
जाके हिरदय प्रेम हो लागा, जगत है बाधक नाई ॥
कर उपदेश बहु थक हारे, मनवा सुनत न कुछ भी ।
मनमुख मनवा कैसे समझे, जो सुख अंतर माई ॥
तीर्थ शिवोम् मैं क्या समझाऊं, सुनने हारा होवे ।
जग तो लागा जग विषयन में, प्रभु प्रेम मन नाई ॥

83. जग को क्या तू मारए, मन मारे सुख होए।
छोड़ लड़ाई जगत में, तो मन वश में होए ॥
जग तो केवल भासता, जग में सार न कोई।
मन तो रहता डोलता, जग ही भासित होए ॥
मन मारे सब मर गए, मरा न मन, न कोई।
मन पर असवारी करें, सुखी है मन तब होए ॥
बुरे कर्म मनवा करें, यह ही मन की रीत ।
बुरे छोड़ अच्छे करे, मनवा निर्मल होए ॥
मान बढ़ाई ईर्षा, दुख की यह जड़ होई ।
निर्मल भोला नेक तू, जग में बुरा न कोए ॥
तीर्थ शिवोम् भजन बिना, मन न निर्मल होए।
हरि कृपा गुरू की कृपा, भव सागर तर जाए ॥

84. सुनो शिवोम् उमर है निकली, जाती छिन छिन पल पल ।
बाल सफेदी अंग शिथिल है, निकट है मृत्यु पल पल ॥
करना चाहे यदि कभी कुछ, तो भी कर न पाता।
अब तो मृत्यु द्वार पह आई, बीतत समय है पल पल ॥
दूर भये तेरे सब अवसर, सिमरन हरि तू कर ले।
हाथ नहीं तो मलता पगले, रोवेगा तू पल पल ॥
तू अब ले मोड़ जगत विषयन से, मन लागा भोगन में।
भोगन भोग लिया तन सारा, गई उमरिया पल पल ॥
प्रेम किया न यौवन में तू, होगा अंत समय न ।
फिर भी शरण है एक ही मारग, राम जपे तू पल पल ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, उमरिया जात बिहाई।
अब भी यदि न चेता मनवा, निकला जात है पल पल ॥

85. निर्भय रहे जगत में ऐसा, जीवित मरतक होए ।
मन में तृष्णा त्याग जगत की, अंतर वासा होए ॥
जागे जग में सोवत हरदम, सोत रहे वह जागा ।
जग का है परभाव, न मन पर, सदा सुखी ही होवे ॥
मनवा रहे कमल की भांति, जल अंदर भी सूखा।
जग में रहे, जगत में नाहीं, जीवित मरना होए ॥
बिना मरे आनंद न होए, मन मारे सुख होई।
मनवा जैसे मरन को पावे, मन आनंदित होए ॥
जीव जगत सब ते बुरा, देखत जगत बुराई ।
झांके अंदर जीव जो, बुरा न दीखे कोए ॥
तीर्थ शिवोम् हो मन रहा, अपने मन आनंद।
छोड़ जगत की वासना, परगट सन्मुख होए ॥

86. वासना कोई नहीं और, कामना भी न रहें।
माया परदा तब हटे, भगवद शरण में ही रहे ॥
जग जो बना है नाम ही, धारण किए है रूप को ।
मोह इसमें न रहे तब, क्लेश मन में न रहे ॥
राम की भगती ही साधन, राम सेवा जो करे।
वह ही जग में सुख है पाता, न कोई बंधन रहे॥
राम तो है ज्ञान सागर, वह कृपा भक्तन करे।
हरण कर सारे अमंगल, दान मंगल का करे ॥
राम की जा शरण में तू, यह ही पथ आनंद का ।
यह जगत दुखदायी भारी, हरण सुख का वह करे ॥
शिवओम् हे मेरे प्रभु, चरणों में अपना लीजिए।
मन सदा ही नाम में, हाथों तेरी सेवा करे ॥

87. हुआ सवेरा सोवत है तू, माया क्यों भरमाया।
अवसर प्राप्त कभी है होता, फिर तू है पछताया ॥
आया था जिस काम जगत में, आई वह है बेला ।
चुक न जाए समय मिला जो, क्यों है उसे गवाया ॥
माया जगत रात अंध्यारी, मोहित करती सबको।
जावत जीव डूब है इसमें, इसमें ही रस पाया ॥
मारग ज्ञान अति सुखदायक, बंधन काटे सारे।
दर्शन पीव प्यारा पावे, रहे न जग लिपटाया ॥
फिर ते काहे सोय रहा है, रात अंधेरी बीते।
अब तो जाग समझ मन मूरख, नहीं रहे अकुलाया ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु के द्वारे, सुख सारे जीवन के।
फिर तू काहे राम जपे न, जगत देख ललचाया ॥

सीख

88. राम नाम हितकारी।
राम जपे है जो, तू मनवा, वह ही मंगलकारी ॥
आशा तृष्णा मन विकार सब, जाते भाग है छिन में।
फिर तू राम न सिमरे काहे, वह ही है सुखकारी ॥
क्यों तू अंधकूप में पड़यो, साधन मुक्ति नाहीं ।
माया राम है काटन हारा, वह ही है अघहारी ॥
फंद कटे माया का, जग का, राम ही दीन दयाला।
ताही शरण गहे तू मनवा, क्यों न जपे मुरारी॥
राम भरोसे जो हैं रहते, कटत कलेश हैं तिनके।
राम नाम ही सुख का सागर, पार करे गिरधारी ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, क्यों न राम जपे तू ।
अघनाशक, सुखकारी है वह, राम ही करत सुखारी ॥

89. तेरा जनम सिरात है जाए, भजत राम न काहे ।
मन तेरा जग में है लागा, भजत राम न काहे ॥
सार हीन जग मिथ्या बनया, क्यों इसमें भरमाया ।
सुख तो नाम विराजे मूरख, भजत राम न काहे ॥
क्या सुख पाया जग में तूने, शोक में ही तू डूबा।
अब तो सोच समझ ले मन में, भजत राम न काहे ॥
अब लगि जीवन वृथा गंवाया, हीरा जनम अमोलक ।
फिर भी हाथ न आया कुछ भी, भजत राम न काहे ॥
हौं समझाय रहा मैं तोहे, अब भी राम तू जप ले।
निकली जाए उमर है तेरी, जपत राम न काहे ।।
तीर्थ शिवोम् समझ तू मनवा, बीत गई सो बीती ।
बाकी समय अमोलक तेरा, भजत राम न काहे ॥

90. नाम सिमर तू नाम सिमर तू, नाम सिमर तू प्रानी ।
काहे जीवन वृथा गंवावे, करत रहा नादानी ॥
माया का संग करत है काहे, वह तो मिथ्याचारी ।
अब भी छोड़े संग तू इसका, यह ही बुद्धिमानी ॥
शरण राम की ग्रहण करे तू, मारग ज्ञान यही है ।
नहीं तो भ्रमित रहे माया में, क्या सोचे अभिमानी !
यह धन तो सपने की नाईं, आए चला भी जाए।
इसके पीछे क्यों तू भागे, रहा करत अंजानी ॥
बालू भीत है यह परिवारा, जाने कब ढह जाए।
तू भरमाया इसके पीछे, वह तो आनी जानी ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, क्यों मन देत तू जग में ।
काल है पकड़े तोहे इक दिन, साथ न दुनिया जानी ॥

91. मनवा राम चरन चित्त लाए।
कौन गति है हो गई तेरी, जग में लगि पछताए ॥
सुख का दाता राम बना है, ता में मन न दीना ।
जाग के पीछे भागत भागत, जग में ही रम जाए ॥
मानुष जनम दिया प्रभु तोहे, तूने कदर न जानी।
जात है बीतत जीवन तेरा, मन में तू अकुलाए ॥
मन का दास बन तू फिरता, दारा सुत के ताईं ।
अब तो मन में समझ ले भाई, यूं ही बीती जाए ॥
जग को समझ सुपन की नाईं, दीखे है, पर नाहीं ।
क्यों भरमावे जग विषयन में, भोग में ही दुख पाए ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो है मनवा, पापी कुटिल बना है।
सिमरन राम करे न काहे, जनम अमोलक जाए ॥

92. तेरा जीवन निकलत जाए, तू समझत नाहीं काहे ।
तेरा बीता जीवन यूं ही, तू समझत नाहीं काहे ॥
विषय वासना लगकर पीछे, रहा भटकता विरथा ।
सीख देत तो मानव नाहीं, तू समझत नाहीं काहे ॥
जग परिवार के ताई लागा, भागत रहा तू हर दम ।
परमार्थ को नाहीं चिह्ना, तू समझत नाहीं काहे ॥
अपना साधन काम न देता, गुरू ही एक उपाय।
ताही शरण गहे तू मूरख, समझत नाहीं काहे ॥
भला बुरा तू सोच ले मन में, किसमें हित है तेरा ।
राम भजन बिन मुक्ति नाहीं, समझत नाहीं काहे ॥
तीर्थं शिवोम् समझ ले मनवा, राम ही पार लंघावै ।
राम भजन कर भोले मानव, समझत नाहीं काहे ॥

93. गया मैं समुन्दर में गोता लगाने,
मगर रह गया मैं किनारे पह बैठा ।

सरकता खिसकता गया मैं किनारे,
मगर होश गुम थे किनारे पह बैठा ॥

हैं बातें बहुत ही बनाता है साधक,
मगर मन में हिम्मत तो होती नहीं है।
नहीं वह उतरता समुंदर के अंदर,
बना ही वह रहता किनारे पह बैठा ॥

है साधन यह सागर है गहरा अति ही,
उतरना है इसमें है मुश्किल बहुत ही ।

गुरूदेव किरपा है जब तक न पाता,
है साधन न करता, किनारे पह बैठा ।।

गुरूदेव है एक नौका जो ऐसी,
जो साहस बंधाती समुंदर उतरना ।
है कर पार जाता समुंदर जो गहरा नहीं,
न है साहस किनारे पह बैठा ॥
है मुश्किल बहुत ही प्रभु को है पाना,
मुश्किल बहुत ही, माया हटाना ।
है मुश्किल बहुत मन को जग से छुड़ाना,
नहीं मन को मारे, किनारे पह बैठा ॥

संभल जा शिवोम् है यह मुश्किल बहुत ही,
है मन मारना और साधन है करना ।
नहीं तो यह जीवन है बीता ही जाए,
रहे देखता ही, किनारे पह बैठा ॥

94. तू करता उपदेश घनेरे, पढ़ि पढ़ि ज्ञान बखाने ।
अनुभव बिना नहीं कुछ प्रापत, राम को तू क्या जाने ॥
रहता दुविधा में तू हरदम, अंतर माया छाई ।
पुस्तक पढ़कर उलटा समझे, राम को कैसे जाने ॥
राम करे सब ही का पोषण, विस्मृत राम करे तू ।
सिमरन राम बिना है कोई, नाहीं राम को जाने ॥
यम के फंदे पड़त है मूरख, माया में लिपटावे ।
भवसागर में रहता डूबे, पर तू राम न जाने ॥
कर्म किए शुभ होए जिसने, उसको सद्गुरू मिलता।
गुरू मारग ही एक उपाय, जिससे राम को जाने ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरूदेवा, दम्भ से मुझको बचा लो।
नाम करूं नित सिमरन तेरा, तो ही राम को जाने ॥

95. जो आता है व्यथा सुनाता, यह संसार दुखी है ।
जिनने मनवा राम को दीना, केवल वही सुखी है ॥
कर्मों का फल जीव है भोगे, सुख दुख पाता रहता ।
गुरू सेवा है जिसने कीनी, आतम वही मुखी है ॥
जीव फिरे जग में भरमाया, तत्व राम न चीहने ।
जग को सुख का कारण माने, तो ही जीव दुखी है ॥
सेवा भाव करे कर्मों को, मन आनंदित रहता ।
तृष्णा छोड़ राम की सेवा, रहता वही सुखी है ॥
हे मनवा तू क्यों न समझे, जग न कारण दुख का ।
अपना कर्म ही भोगत है तू, मन में रहत दुखी है।
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, क्यों जग में भरमाया।
शरण राम ही में सुख उपजे, रहता सदा सुखी है ॥

96. उड़ चला जब डाल से, पंछी खुले आकाश में।
ढूंडता फिरता सहारा, वह खुले आवकाश में ॥
अब तलक बैठा था वह ,इस शाख पर उस शाख पह।
है नहीं घर बार उसका, अब तो वह आकाश में ॥
किस घर ठिकाना जा करूं, वह सोच मन में है रहा ।
घर कोई दिखे न उसको, बेचैन वह विश्राम में ॥
किस जगह भेजेगा मुझको, कैसा घर देगा मुझे।
सोचते ही रह गया वह, इक पल नहीं आराम में ॥
जैसी मरजी हो तेरी, वैसा ही रख तू हे प्रभु ।
मैं हुआ तेरे हवाले, बस हूँ तेरे ही काम में ॥
सोच कर शिव ओम् यह, पंछी के मन संतोष है।
अब कहाँ जाना किधर को, वह ही सर अंजाम दे ॥

97. मनवा तू पछताएगा ।
आयु बीत चली है तेरी, अंत समय पछताएगा ॥
अच्छे कर्म नहीं तू कीने, पाप कर्म में लगा रहा।
त्रास देत यमदूत तुझे जब, तब तू फिर पछताएगा ॥
माया नगरी जगत भुलाना, सुख नाहीं पाया तूने ।
दुख में जब तू घिर जाएगा, तब तू फिर पछताएगा ॥
राम सकल है सुख का सागर, जिसको तू भूले फिरता ।
नाम कमाई की न तूने, अंत समय पछताएगा ॥
राम जपे और सेवा कर ले, जीवन का फल तू पावे।
नहीं तो दुख में जीवन बीते, अंत समय पछताएगा ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, काहे समय गवाएं तू ।
जीवन की कीमत न जानी, अंत समय पछताएगा ॥

98. क्या मानुस तन लाभ कमाया।
माया माहीं रहा लिपटाना, पल पल व्यर्थ गंवाया ॥
नेक कमाई कुछ न कीनी, धन जोड़न में लागा।
अहंकार में भूला फिरता, नाम राम नहीं गाया ॥
जभी सिखावन तुमको दीनी, मन में नाहीं भायी।
मन दीना जग में तू ऐसा, हाथ नहीं कछु आया ॥
सुत दारा में रहा भरमता, अपना न कुछ सोचा।
क्या होगा परलोक में तेरा मन में नाहीं आया ॥
समय बचा है जो भी थोड़ा, उसकी चिन्ता कर ले।
नेह राम से पैदा कर ले, राम चरन चित लाया ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, जीवन बीता जाए।
क्या है लिया बनाया तूने, हाथ में क्या है आया ॥

99. तेरी उमरिया निकसत जाए रे, तोहे अबहूं समझ न आई।
तेरा मन लागा विषयन में, तू अब भी सोच ले भाई ॥
तूने दुर्लभ जीवन पाया, व्यर्थ गंवाया जग में।
हरि भजन न कीना मूरख, जीवन दियो गंवाई ॥
काल न छोड़त किसी जीव को, तू भी ग्रास बनेगा।
तब सिर धुनि धुनि पछताए, नाही नाम कमाई ॥
हंकार धारण मन माहीं, स्वारथ में रत रहता ।
अंत समय जब सिर पर आए, सकत न कछु बनाई॥
सुत दारा स्वारथ के साथी, साथ कोउ न जाए।
जब यम लेने तुझको आए, एक अकेला जाई ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, दुर्लभ जनम गंवाए।
राम भजन बिन सार न दूजा, काटे जनम विहाई ॥

100. मैं चला था ढूंडने भगवान को,
पर दिया भगवान को मैंने भुला।
डूबता दुनियां की दलदल में रहा,
जगत के भोगों में ही तो मैं गला ॥
अब बसेरा हो गया दुनियां में ही,
अब तो दुनियां ही की, मैं था सोचता।
कौन है भगवान मन में भी नहीं,
पर दिया दुनियां ने तो मुझको रूला ॥
वासनाओं में घिरा, और कामनाओं में फसा,
छटपटाता फिर रहा हूं जगत में।
भोगता सुख दुख रहा मैं इस तरह,
रो रहा हूं इस तरह अब बौखला ॥
हूं तड़पता, रो रहा, पछता रहा,
मैं खरी खोटी सुना जग को रहा।
पर यह दुनियां छोड़ती मुझको नहीं,
मैं रहूं कितना भी चाहे कुलबुला ॥
मैं बढ़ूं आगे तरफ भगवान के,
या कि जाऊं तरफ दुनिया मैं बढ़ा।
तू बता मुझको, कि मैं जाऊं कहां,
कुछ न सूझे क्या बुरा और क्या भला ॥
शिव ओम् तो खोया गया है जगत में,
है दिया भगवान को उसने भुला।
अब तड़पता फिर रहा, पछता रहा,
भोगता है अब जगत की वह बला ॥

101. समझ ले कोई नहीं है साथी।
जैसे बूंद ओस की पिघले, त्योंही काया जाती ॥
मात पिता और भाई भगिनी, स्वारथ के सब साथी ।
उड़ा आकाश में ज्यों ही, पास नहीं कोई आती ॥
जो तेरे संगी है प्यारे, कोई साथ न जाए।
चला अकेला जीव बेचारा, कोई न पूछे बाती ॥
परिवार कमाया तूने, अच्छा बुरा न सोचा।
कुछ भी तेरे साथ न जाए, खाली हाथ दिखाती ॥
अब भी मन में सोच जरा तू, क्या है करने आया।
क्या भोगा है तूने जग में, क्या है अब भी बाकी ॥
तीर्थं शिवोम् समझ मन मूरख, समय न यूं ही गंवा तू।
राम भजन कर नेक कमाई, यही बात है साची ॥

102. दीप जले हैं मन के माहीं ।
तू अंध्यारे क्यों है बैठा, क्यों देखत न मन के माहीं ॥
अंदर का परकाश न देखे, बाहर बाती ढूंढे।
कैसे वस्तु दीखे तुझको, वस्तु तो अंदर के माहीं ॥
भरम भुलाना जगत बावरा, अपना मन न देखे।
मन के अंदर राम बिराजे, वह ढूंढे है जग के माहीं ॥
दीप शिखा अंतर में जलती, अंदर राम समाया ।
बाहर जग अंध्यारे डूबा, क्यों फिर पावे अंदर माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, अंतर करो उजाला ।
तम नाशे मन निर्मल होवे, पा जाऊं अंतर के माही ॥

विनय

103. पापी हिरदय भवन बना है, करत कामना वासा।
मूरख जीव बना है भारी, करत रहा विसवासा ॥
है योगी जती सती संन्यासी, जकड़ रहे सारे ही।
छूट न कोई इससे पाया, छोटा बड़ा निरासा ॥
उलझे जग में, बना वह चंचल, आशाए मन में हैं।
यही भूल है करता रहता, जग में सुख की आसा ॥
लोभ मोह आसक्ति छूटत, नाहीं रही छुड़ाए।
बने बावरे मद में सारे, चाहे ले संन्यासा ॥
जो जन नाम जपे हरि मीठा, उतर पार वह जावे ।
मन में रहे नहीं आसक्ति, जावत परले पासा ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा मेरे प्रभु, शरण तिहारी आया।
चेतन नाम दान मोहे दीजो, मन में दृढ़ विस्वासा ॥

104. प्रभु हौं डार दिये हथियार ।
युद्ध जगत का लड़ा न जाए, हूं मैं बड़ा लाचार ॥
मारग समझ न आवे कोई, काय करूं कित जाउं ।
शरण तुमारी हूं मैं आया, खोजन कोई द्वार ॥
भूल भुलैया जगत अनोखा, भरा भोग विषयों से ।
समझ न आवे इसकी कोई, सूझत आर न पार ॥
जगत सताता, मुझे लुभाता, है भरमाता मुझको ।
है यह भासित माया सारी, निकल सकूं न पार ॥
पुरषारथ अभिमान न कोई, काम है मेरे आए।
कैसे पार करूं मैं इसको, सूझत न उपचार ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, मैं तो समझ न पाऊं।
मारग तुम्हीं दिखाओ मोहे, हूं डूबत मझधार ॥

105. सुख त्याग कर जगत के, आया शरण तुम्हारी।
तेरे ही गुण मैं गाऊँ, अब लाज रख हमारी ॥
जग है बड़ा अनोखा, देता सभी को धोखा।
तुमरी शरण में सुख है, अब लाज रख हमारी ॥
मन फिर भी जग को धाए, वश में नहीं वह आए ।
है नाम तेरा पकड़ा, अब लाज रख हमारी॥
दर दर भटक मैं हारा, फिरता मैं मारा मारा।
मिलता नहीं किनारा, अब लाज रख हमारी॥
अब तुम पह आश सारी, दुनिया तो छान मारी।
तुमसा दिखा न कोई, अब लाज रख हमारी॥
शिव ओम् थक है हारा, साधन की तेज धारा ।
पाया नहीं सहारा, अब लाज रख हमारी ॥

106. प्रभु हौं एक ही बात कहीं।
वह भी मानत नाहीं तुम तो, डूबत जात रही ॥
जगत भोग है मोहे सतावत, मन विषयन में लागा।
अन्तर नाहीं तड़प है तेरी, अरज गुजार रही ॥
मैं न चाहूँ धन जोबन को, नाहीं सुख परिवारा।
तुम पाए मन शीतल होए, मन में कसक यही ॥
सन्मुख भवसागर है गहरा, पार करत न आवे ।
लांघू इसको कैसे प्रभुजी, सूझ न आए रही ॥
कृपा हूं मांगत तुमसे, कृपा बिना निस्तारा।
तुम तो दीनदयाला गिरधर, दुआरे आय रही ॥
तीर्थ शिवोम् हूं आई शरणी, तुमरा एक भरोसा ।
उत्तर सकूँ न, पार उतारो, ये ही बात कही ॥

107. नाक मैं रगडूं माथा टेकूं, कान पकड़ मैं हारी।
अब तो क्षमा करो हे सजना, सुन लो अर्ज हमारी॥
भूले रही तुम्हें मैं प्रभुजी, जन्मों युगों युगों तक ।
जग में बनी आसक्त मैं ऐसी, मति रही है मारी ॥
करत रही मैं संचय अन्तर, कर्म वासना भारी ।
चंचल मन हो रही भ्रमित हूं, पर न शरण तुम्हारी ॥
अब तो हिरदय तड़पे मोरा, मिलन तुम्हारे ताई ।
कैसे कहां तुम्हें मैं पाऊं, समझ न आत हमारी ॥
जगत पड़ी, जग भोगत हारी, चैन न अन्तर पाया।
मन में होत वियोग की पीड़ा, नींद भूख सब मारी ॥
तीर्थ शिवोम् विनय तुम आगे, क्षमा करो भूलों को।
अब तक रही भटकती जग में, अब हूं शरण तिहारी ।।

108. अखियां बरसे, जियड़ा, धड़के, बिन प्रियतम के देखे ।
काय करूं, कुछ सुझत नाहीं, चैन नहीं बिन देखे ॥
सुनते सजना सर्वव्यापक, कहीं उसे न देखूं ।
कहां छिपा बैठा है बालम, कैसे नयनां देखे ॥
प्रभु बनाया जगत पसारा, कण कण वही समाया ।
माया परदा ओढ़ के बैठा, जग को वहीं से देखे ॥
मैं लिपटानी माया माहीं, वह परगट जग माहीं ।
ताही ते वह दीखत नाहीं, जीव न तोहे देखे ॥
जा पर कृपा प्रभु की होई, वो ही उसे पछाने ।
नहीं तो तड़प तड़प रह जावे, प्रभु को न वह देखे ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा है सजना, मो को दर्शन दीजो।
जग में उलझी मैं तो नारी, कैसे तुमको देखे ॥

109. मन मंदिर में गुप्त हो बैठे, क्यों बाहर न आते।
कण कण माहीं रमे हुए हो, क्यों तुम नजर न आते ॥
मैं खोजत फिरती हूं तुमको, बन बन डगर डगर में।
अता पता तेरा न पाया, क्यों तुम नजर न आते ॥
सांस सांस तुझको ही सिमरूं, तीरथ मन्दिर देखे।
इधर-उधर मुझको भटकाते, क्यों तुम नजर न आते ॥
उमरिया बीती खोजत तुमको, तुम न मिले कहीं भी ।
काय करूं, कहां से पूछू, क्यों तुम नजर न आते ॥
दो बतलाए कारण क्या है? क्या गलती जीवन में।
क्यों हो अपना आप छुपाए, क्यों तुम नजर न आते ॥
तीर्थ शिवोम् हूं दासी तेरी, किरिपा अब तो राखो।
अवगुण मेरे क्यों देखते हो, क्यों तुम नजर न आते ॥

110. यह जीवन सुन्दर हो जाए, जो कृपा तुम्हारी हो जाए।
छुटकारा जग बन्धन से हो, जीवन सुखकारी हो जाए ॥
मनवा भजन करे तेरा ही, पर कहीं दिखाई न देते।
दर्शन जो तेरे हो जाए, तेरा उपकारी हो जाए॥
तुम जागृत हो, किरपा राखो, करत अनुग्रह जीवों पर ।
हरदम देखूं तेरी लीला, पल पल सुखकारी हो जाए ॥
डोर रहूं मैं तुमरी पकड़े, निसदिन तेरा ध्यान करूं ।
चंचल मनवा जग से हटकर, तेरा अनुचारी हो जाए ॥
दीन दयाला तुम हो प्रियतम, तेरा एक सहारा है।
न कर सके दुखी जग मुझको, चाहे दुखकारी हो जाए ॥
है तीर्थ शिवोम् विनय करता, तुम कृपावन्त प्रतिपालक हो ।
हूँ चरण शरण तेरी आया, मनवा हितकारी हो जाए ॥

111. प्रभु मेरे में शक्ति साधन, कुछ भी है तो नाहीं ।
कैसे करूं बखान तेरे गुण, यह गुण है तो नाहीं॥
अलख अलेख अमोघ तेरे गुण, न कोई समझे जाने।
मेरी बुद्धि मोटी-खोटी, अनुभव कुछ तो नाहीं॥
तू है अनत असीम अगोचर, पात्र बहुत ही छोटा।
कैसे भरूं मैं ज्ञान अनन्ता, मुझमें समझ तो नाहीं ॥
बस मैं तो गुलाम हूं तेरा, साधन ज्ञान न जानूं।
हिरदय एक भाव तेरा ही, और भाव तो नाहीं ॥
दीन दयाला मेरा प्रभुजी, ये ही ज्ञान मुझे है ।
अपने प्रियतम रहूं समर्पित, भान ज्ञान तो नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु ही ऐसा, दुविधा सारी जारे।
दूजा जग में ऐसा कोई, साचा मीत तो नाहीं॥

112. प्रभु जी कैसे भेद तेरा मैं पाऊँ, कैसे मन समझाऊँ।
मन तो चंचल बना है मेरा, थिर मैं रख न पाऊं ॥
प्रतिपल रहता भटकत जग में, चैन घड़ी भर नाहीं।
मन माया है उलझा ऐसा, जान तुम्हें न पाऊं ॥
आवागमन बना जग माही, सुख दुख सहते सहते।
तेरे बिना सहारा नाहीं, तुम पह ही कह जाऊं ॥
भले लगे सब दुनिया वाले, बुरा न कोई दीखे।
जब तक भाव प्रकट यह नाहीं, कैसे तुमको पाऊं ॥
तेरा रूप तभी परकाशित, चेतन नाम कमावे।
देखत लीला चेतन अन्दर, मन निर्मलता पाऊं ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, सतिगुरु देव मिलाय।
नाम का दान मुझे भी प्रापत, सब जग तुम्हें ही पाऊं ॥

113. आधि व्याधि उपाधि सब ही, राम कृपा से नासी।
सदगुरु कृपा से मारग पाया, पार ब्रह्म अविनासी ॥
घर बैठे सदगुरु है पाया, घट घट वास है उसका।
करी दया सदगुरु ने मो पर, जाना पड़ा न कासी ॥
राम कहां मैं खोजूं जाकर, उसका पता न कोई।
कण कण माहीं छुपा वह बैठा, हर मन अंग का वासी ॥
अनुकम्पा गुरुदेव की पाई, साधन मार्ग खुला है।
तृष्णा मन की घटती जाये, दर्शन राम मैं पासी ॥
माया ही आवरण बना है, प्रभु जीव के माही।
सदगुरु देव दिया है साधन, परगट जो है जासी ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, बलिहारी मैं जाऊं।
मुझे निकाला भव से बाहर, तू अन्तर अविनासी ॥

114. पीय मैं, तुमको कैसे पाऊं।
राह उपाय न सूझत कुछ भी, कैसे मेल मिलाऊं ॥
जो कुछ सूझा, सब मैं कीना, पर तुम नाहीं आए।
और नहीं कर सकूं मैं कुछ भी, क्या मारग अपनाऊं ॥
दुविधा पड़ी हूं डोलत मनवा, जीव निकलता जाए।
जप तप व्रत सब कर कर देखे, कैसे तुम्हें मनाऊं ॥
मेरे कर्म ही बने हैं बाधक, मिलन प्रभु न देते।
जतन हजारों कीने मैंने, कैसे उन्हें हटाऊं ॥
पुरुषारथ तो काम न आया, जतन सफल न कोई।
अब तो कृपा सहारे ही मैं, जीवन शेष बिताऊं ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो मेरे सजना, अवसर बीता जाए।
ऐसी किरिपा राखो मो पर, जौ तुमको मिल पाऊं ॥

115. मैं हूं कुटिल, पापी पर-निन्दक, कूप से कौन निकाले ।
पाप ही कर्म कमाए मैंने, मुझको कौन सम्भाले ॥
बीच पड़ा माया में उतरा, तम छाया है गहरा ।
हूं तो मूढ़ हठी अज्ञानी, प्रभु ही मुझको पाले ॥
मन वाणी में समता नाहीं, मन की बात न खोलूं ।
ऐसा मिथ्याचारी मनवा, हर इक बात को टाले ॥
हे प्रभु तेरी शरण पड़ा हूं, तेरा एक सहारा ।
केवल तू रक्षा करनारा, तू ही मुझे बचा ले ॥
जग से तो कुछ आशा नाहीं, देखा करे तमाशे ।
तू गुरु मात पिता स्वामी सब, तेरे सभी हवाले ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, आशा अब न कोई।
आशा केवल एक तुमारी, जग तू ही प्रतिपाले ॥

116. प्रभु लगाए शत्रु पीछे, वह ही रक्षा करता ।
शरण लेत जो राम प्रभु की, हाथ देय कर रखता ॥
हे स्वामी तुम लाज बचाते, आए युगों युगों से।
भक्तन अपने किरिपा करके, अभय दान हो करता ॥
भगती करे हैं जो दिनराती, दुविधा ताकी जाये।
दुख वाके वह दूर करत है, मन में आए वसता ॥
जग तो हरदम मिथ्याचारी, वह तो केवल भासित।
मन से माया मल है जाए, राम प्रभु सब करता ॥
प्रभु के भक्त को भय को नाहीं, नहीं डराए डरता।
जनम न जाए विरथा ता का, पल पल राम सिमरता ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता हूं मैं शरण तिहारी ।
आए राखो लाज हमारी, सिर चरणों में धरता ॥

117. मन मेरे जो बीतत है, सो मन ही जानत है।
जग में रहा तड़पता मैं हूं, कोई न जानत है ॥
मन का चैन गया है मेरा, नींद नहीं आवत है।
प्रभु बिना है मोरा मनवा, और नहीं मांगत है ॥
जग तो जैसा है वैसा ही, विरथा बात बनाए ।
क्या लेना और देना जग से, प्रेम नहीं जानत है ॥
जग को छोड़ हरि को ध्याऊं, मन को अच्छा लागे ।
हरि ही से तो नेह लगा है, वह ही मन भावत है ॥
प्रभु दिखाओ रूप सलौना, छोड़ो भी अब जग को ।
नाता तेरा मेरा सीधा, जग न बीच आवत है ॥
तीर्थ शिवोम् हरि मन लागा, और तो नाहीं भाए।
दया करो हे गिरधर मोरे, मन तोहे धावत है ॥

118. जीव तेरे सब स्वामी, तू है घट घट माहीं ।
बाहर तुझसे नहीं है कोई, जग तेरे ही माही ॥
खोजत खोजत सब जन हारे, तुझे किसे न पाया।
तेरी किरपा बिना नहीं है, कोई सकत है पाहीं ॥
सर्व सुखों का दाता तू ही, जगत तेरा विस्तारा।
जब चाहे तू लए मिलाए, जैसे भाव है आहीं ॥
हम तो केवल गान करें प्रभु, अलख जो गुण हैं तेरे ।
हम तो और न सकते कर हैं, क्यों कर तुमको पाहीं ॥
अपने बल तो तुझे न परगट, निर्बल जीव करे न।
जब तू चाहे परगट होए, जीव तुझे पा जाही ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, धूल तेरे चरणों की।
मिले बिना मुझ किरिपा तेरी, मैं न दर्शन पाहीं ॥

119. तेरे हूं अब हवाले, मेरे सलौने प्रियतम ।
तुम बिन है नाहीं कोई, ऐ मेरे प्यारे प्रियतम ॥
हंकार को छुपाकर रखा युगों है मैंने।
वह भी तेरे हवाले, अब तुम ही मेरे प्रियतम ॥
दर्शन की अब हूं प्यासी, मन में न आश कोई ।
तुम में ही मन लगा है, तुम पह विनय है प्रियतम ॥
तुम मारो या तारो जो भी, हर हाल में हूं तेरी ।
तेरे चरण में लागी, दूजा न सूझे प्रियतम ॥
दर पह हूं मैं पड़ी अब, किरिपा की भीख मांगू।
दर तेरा छोड़कर के, जाऊं कहां मैं प्रियतम ॥
शिवओम् हो चुकी हूं, चरणों की तेरे दासी ।
हो राम विष्णु शंकर, सब कुछ तुमी हो प्रियतम ॥

120. मैं चली आई तेरा नाम, तेरा यश सुनकर।
तुम छुपे बैठे कहां, गुमनाम बने हो रहकर ॥
मैं बड़े मान से ही, आई थी दर पह तेरे ।
लाज सब छोड़ ही दी, कैसे हटूं में डरकर ॥
अब तो मैं आ ही गई, दर्स तेरा पाने को ।
मुखड़ा दिखला ही दो, अब तरस ही खाकर ॥
तुम तो हर घट में रमें, तुम ही तो सारा जग हो ।
क्या गिला मुझसे तेरा, गुम हो बैठे बनकर ॥
न हटूं दर से तेरे, धूनी रमाकर बैठी ।
किरिपा अब कर ही तो दो, आई हूं दुखिया बनकर ।
मैं तो शिवओम् कभी, सामने से अब न हटूं।
पाने दीदार तेरा, आई भिखारिन बनकर ॥

121. सागर तीरे राह निहारूँ, तेरे ही आवन की।
मन में आश बनी है मेरे, दर्शन को पावन की ।
हिरदय सागर होत तरंगित, मन चंचल हो जाए।
अवसर देत न मोहे कुछ भी, तृष्णा के जावन की ॥
तृष्णा माया ममता सारी, मैं तो छोड़न चाहूं ।
अब तो दुखी हुई मैं इनसे, छूटे ममता जग की ॥
कृपा करो हे मेरे प्रियतम, तुझ दर्शन बिन तडपूं।
जगत विषय मन भावत नाहीं, भावत इक आवन की ॥
तुम्हें पुकार रहीं मैं प्रभुजी, अब तो टेर सुनो भी।
कब की रही पुकारत तोहे, राह देखूं आवन की ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे बलमा, अर्ज गुजारूं तोहे ।
तुम बिन मन लागत है नाही, तुमसे सुख पावन की ॥

122. हरि ही साजन प्राण अधारा ।
हरि से ही अब नेह लगा है, वो ही प्रीतम प्यारा ॥
प्रभुजी मैं तो हो गई तुमरी, तुम ही मोहे भाए।
मिथ्या जग विष के सम दीखे, जग में नहीं विचारा॥
भगती चेतन नाम अधारा, किरपा कर मो दीजो।
सिमरन नाम हरि गुण गाऊँ, तो ही हो निस्तारा ॥
हिरदय माहीं तुमीं विराजे, मन में आश तुम्हारी।
अब तो रंग तुम्हारे रंग गई, अन्तर प्रेम अपारा ॥
सजना बेग करो अब जल्दी, दर्शन तेरा पाऊं।
मनवा हर दम लागा तुझमें, छूटे जगत किनारा ॥
तीर्थ शिवोम् है मेरे प्रभुजी, तुमरा पंथ निहारूं ।
दुजी कोई आशा नाहीं, तेरा एक सहारा ॥

123. हे स्वामी तू दान प्रदाता।
तू भगती दान कृपा कर दीजो, तुम सम को न दाता ॥
मांगत नाम दान ही तुमसे, आशा दूसर नाहीं।
बाहर निकलें जग घूमन से, नाम ही यह फल दाता ॥
तेरे सम दूजा को नाहीं, तुम सा तू ही तू है।
जगत बनाया गुप्त रहा तू, ऐसा जग निर्माता ॥
मैं आया हूं शरण तिहारी, छोड़ जगत की माया।
करो कृतारथ मो को प्रभु जी, तू ही एक है दाता ॥
सुख दुख माहीं जकड़ रहा हूं, छूट नहीं हूं पाता।
अब तो एक सहारा तुमरा, जाए मन उत्पाता ॥
तीर्थ शिवोम् चरण में लागा, मन है आश तुम्हीं से।
अंगीकार करो प्रभु मोहे, श्रद्धा सुमन हूं लाता ॥

124. हे प्रभु काहे विधि मन समझाऊं।
उलटी चाल चलत है मनवा, मैं तो रोक न पाऊं ॥
सब कुछ सोचे सकत विचारे, अपनी अकड़ न छोड़े।
सूझत नहीं उपाय मुझको, जा से वश कर पाऊं ॥
भक्ति ज्ञान योग साधन भी, सब कुछ करके देखा।
समझत नहीं है मन समझाए, कैसे इसे मनाऊं ॥
सभी करत विपरीत यह करनी, सूधो नाही चाले।
हस्ती मस्त बना यह घूमत, वश कैसे कर पाऊं ॥
आशा एक ही तेरी अब तो, मनवा बस में आवे।
करत जतन मैं तो थक हारी, अब तो तुम्हें मनाऊं ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, मनवा बहुत सतावे।
अब तो आश भरोसा तुम हो, तुम ही सीस नवाऊं ॥

125. बंधन मुक्त करो प्रभु मोहे, सेवक तुम्हें पुकार रहा।
थक हारा घबराया जग से, खड़ा है तेरे द्वार रहा ॥
विषयों ने मोहे है घेरा, सूझत कोई उपाय नहीं ।
डूबत जाता डूबत जाता, डूबत हूं मझधार रहा ॥
मैं लोभी मोही मतवाला, पापी नीच कुकर्मी हूं।
तृष्णा रही नचावत मोहे, जानत आर न पार रहा॥
उठती विषय तरंगें मन में, बुद्धि भ्रमित हुई मेरी ।
छूट न पाऊं मैं भोंगो से, जग की खाय मार रहा ॥
देखे सभी ठिकाने मैने, भिक्षा मिली न कहीं मुझे।
अंतिम तुमरे द्वारे आया, आशा मन में धार रहा ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे प्रभुजी, विनय तेरे चरणों माहीं ।
मन बुद्धि है तुम्हें समर्पित, तुझ पर सब वार रहा ॥

126. हे शिवशंकर त्रिपुरारी, अब राखो लाज हमारी।
अवघड़ दानी प्रभुजी, हम आए शरण तुम्हारी ॥
हम पड़े दुआरे तेरे, तम में ही डूब रहे हैं।
अब करो अनुग्रह हम पर, हे शिवशंकर त्रिपुरारी ॥
तुम रूप धरो भैरव का, दुष्टन उत्पाद मचावें ।
हम तो है ठहर न पाते, संहार करो बलधारी ॥
तिरशूल तेरे गुण तीनों, हैं करत जगत का सिरजन ।
फिर जग तिरशूल समाता, लीला है तुमरी न्यारी ॥
हमको कुछ सूझ न पाता, है माया माही ठाड़े।
काढ़ो हम पातक भारी, किरपा के हम अधिकारी ॥
शिवओम् पुकारे शंकर, कैलाश से उतरो नीचे।
हम जग में तड़प रहे हैं, अब सुन लो विनय हमारी॥

127. दया करो दुखियारी पर, हे हनुमत वीरा ।
तुम बिन दूजा नाहीं, मन माहीं न धीरा ॥
गुरूदेव की सेवा मेरा, लक्ष्य बना है।
बीते हर क्षण उसीमें ही, हे हनुमत वीरा ॥
गुरू वियोग में बीत रही, है मेरी रैना ।
समझत नाहीं कुछ भी मैं, हे हनुमत वीरा ॥
तड़पत रोवत मैं हूं सिसकत, पल पल छिन छिन माहीं ।
कैसे समझाऊं यह मनवा, हे हनुमत वीरा ॥
प्रेम गुरू में मस्त रहूं मैं, हरदम सेवा करती।
गुरू समाया हिरदय माहीं, हे हनुमत वीरा ॥
टूटे बंधन, मुक्त बनूं मैं, गुरू प्रेम रंग राती ।
गुरू प्रेम ही जीवन मेरा, हे हनुमत वीरा ॥
तीर्थ शिवोम् जगत के स्वामी, पत राखो अब मोरी ।
अब तो एक तुम्ही से आशा, हे हनुमत वीरा ॥

128. हरि सुमरन में मन है लागा, राम मेरे मन भाया।
राम लिए ही जीवन सारा, राम लिए अनुरागा ॥
राम ने हिरदय बींध दिया है, तड़प मिलन मन माहीं ।
अब तो जग की तृष्णा छूटी, राम में ही मन लागा ॥
कण कण माहीं राम मेरा है, पर न दीखत मोहे ।
राम लिए हिरदय अकुलाए, भाव राम मन जागा ॥
डगर डगर में खोजत फिरती, राम मिले न मोहे ।
अब तो हिरदय छटपटाहट है, मन का चैन है भागा ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे हे प्रियतम, दर्शन मोहे दीजो।
लगी रहूं चरणों में तेरे, दूजे मन न लागा ॥

129. मैं भूल भी जाऊं तोहे, पर नहीं भुलाना मोहे ।
मैं तो भूलनहारा, पर नहीं भूल है तोहे ॥
भ्रम में भूला जगत बावरा, समझत जगत ही अपना ।
जंजाल से निकलूं मैं तो, किरिपा करना मोहे ॥
नीच कुटील पापी समझे सब, कहकर दूर भगायें।
मेरे हिरदय प्रेम है तेरा, शरण दीजियो मोहे ॥
मरने बाद मिले जो मुक्ति, कोई क्या देखेगा।
जीवित मुक्त करो हे प्रभुजी, करो निराश न मोहे ॥
पापी नीच शिवोम् पड़ा है, शरण तुम्हारी प्रभुजी ।
जग में ठौर मिली न कोई, ठौर तुम्हारी मोहे ॥

मन

130. मनवा रूप धरे काया का, मनवा ही है माया।
रमा जगत में ऐसा मनवा, जग को ही वह धाया ॥
मनवा उछले, मनवा कूदे, मनवा सकल पसारा।
घर परिवार सकल है मनवा, नाम रूप धर आया ॥
मनवा ही है पक्षी बनकर, उड़े अकाश अनंता ।
जल थल वायु रूप धरा है, पकड़ न कोई पाया ॥
मनवा बनता जोगी भोगी, रस धरे बैरागी ।
साधक बन आराधे ईश्वर, क्या क्या हुई हुई आया ॥
मनवा बदले रूप अनेकों, संसारी ब्रह्मचारी ।
सभी जगत को जकड़े लेता, ज्ञानी छूट न पाया ॥
तीर्थ शिवोम् शरण गुरुदेवा, मनवा समझ न पाऊं।
कब क्या करे करावे मुझसे, मैं इससे भरपाया ॥

131. मैया तेरी किरपा अजब अलौकिक।
लीला तुमरी अचरज होता, कैसी बनी है मोहक ॥
मैया तू है घट घट व्यापक, अन्तर्यामी हर मन की।
उपरत हो मन जग विषयों से, हटूं जगत जो है भौतिक ।।
सेवा भजन करूं मैं तेरा, मन तेरे में लगा रहे।
अनासक्त निर्लिप्त बनूं मैं, कर्म चाहे कितना लौकिक ॥
मनवा चंचल है अति मेरा, थिर न होवत कहीं कभी।
बना अशक्त मैं इसके आगे, आध्यात्मिक होना हो भौतिक।
अब तो शरण तेरी मैं मैया, तारो चाहे पार करो
है तुझे समर्पित यह जीवन, तुमने दिया जो है भौतिक ॥
हे माँ टेर सुनो अब मेरी, तीर्थ शिवोम् लगा चरणीं।
हूं शरण तुम्हारी तन मन से, हो कर्म अलौकिक या लौकिक ।।

विनय

132. प्रभुजी, जग ने बहुत रूलाया।
आना चाहूं तुमरे द्वारे, उसने परे हटाया ॥
तुम तो अन्तर्यामी प्रभुजी, देखत रहे सभी कुछ।
जग को नहीं हटाया तुमने, नाहीं मुझे बचाया ॥
मैं अबला दुखियारी नारी, किसको जाय पुकारूं।
तुमको छोड़ कौन है मेरा, तुमसे ही सब पाया ॥
अब तो चरणों में ही राखो, जग न मुझे सुहावे।
सुख के दाता केवल तुम ही, नाम तेरे सुख पाया ॥
जैसी कैसी तेरी हूं मैं, तुमरे संग ही रहसूं।
मनवा लीन तुम्हीं में होवे, यह ही मैं मन भाया ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवंता, जग में अब न डालो।
भर पाई हूं मैं तो इससे, बहु दुख मैने पाया ॥

133. प्रभुजी राखो मोहे शरणी, पड़ा तुम्हारे चरणी ।
मैं तो जानत कुछ भी नाहीं, न जानूं मैं तरणी ॥
दम्म खोट अभिमान भरा हूं, पड़ा जगत के माहीं ।
धर्म विचार भाव सब उल्टे, नेक नहीं कुछ करणी ॥
कर्म भोग के आया जग में, संचित करने लागा।
यहां गंवाया जो भी मैंने, कर न पाऊं भरणी ॥
भटका फिरा जगत में सारा, खोजत सुख को हारा।
पाया कुछ भी, कहीं न कोई, लागा तुमरी चरणी॥
तीर्थ शिवोम् कृपा हे प्रभुजी, हूं तो बालक तेरा।
दीन हीन अब दशा है मेरी, सुख तेरी ही शरणी ॥

134. पाप के घर में हूं मैं बैठा, बना फिरत सरदार हूं।
आशा तृष्णा सैनिक मेरे, होता बहुत खवार हूं ॥
पाप ही पाप है चारे पासे, हिलन नहीं मुझको देते।
काय करूं, कुछ सूझत नाहीं, रहता बस बेकार हूं ॥
सतगुरू मेरे कृपावंत हो, दीनन का दुख हरते हो ।
सुध लो मेरी आप प्रभुजी, करता तुम्हें पुकारू हूं ॥
मेरा तो कुछ जतन न चाले, कैसे बाहर मैं निकलूं।
तुम ही एक सहायक मेरे, यह ही अर्ज गुजार हूं ॥
तेरे लिए कठिन न कोई, हुकुम तेरा सब चलता।
मुझको तारो, पार करो अब, पड़ा बीच मझधार हूं ॥
सुनो पुकार हे मेरे प्रभुजी, शरण तुम्हारी हूं आया।
अब तो नैया पार लंघाओ, मैं तो बिन पतवार हूं ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, मैं हूं तुम्हें पुकारूं ।
और सहारा दूसर नाहीं कैसे उतरूं पार हूं ॥

गोरख कल्याण

135. कब तक रहूंगी बैठी, हरदम तुझे ही देखूं ।
अखियां तो मेरी सूजी, राह तेरी ही देखूं ॥
हिरदय है मेरा धड़के, आंखों से वर्षा होती।
हर पल बनी उदासी, आते तुझे ही देखूं ॥
सावन भी है जाए बीता, दिवस मिलन के जाए।
पर तुम तो नाहीं आए, हर पल तुम्हें ही देखूं ॥
जाने को है जुबना मेरा, रैन है बीती जाए।
तुझे तरस नहीं है आया, तुझ बिन सब ही देखूं ॥
अभी तलक तुम तो आए न, रोती रहत हूं निसदिन ।
अब जाए बीता जीवन, आता तुम्हें न देखूं ॥
शिवओम् मैं रही हूं, छिन छिन पुकारती हूं।
पर तुम हो बड़े ही निष्ठर, तुम सा कोई न देखूं ॥

कृष्ण

ऐ मोहन प्यारे आ जाओ, मुरली की तान सुना जाओ।
मैं खड़ी द्वारे आश लिए, आशा तो मुझे बंधा जाओ ॥
मुरली की तान में क्या जादू, चंचलता मन की दूर करे।
है थिर होता मनवा चंचल, मन को थिर तो करवा जाओ ॥
जब तुमरी किरपा होती है, है तान की किरिया परगट भी।
किरिया से निर्मलता आती, किरिया को प्रकट करा जाओ ॥
मनवा तो हरदम डोले है, आराम नहीं पल भर को भी।
यह चमत्कार है मुरली का, यह मन अंदर प्रगटा जाओ ॥
मुरली सुन सुध बुध भूल गए, गऊएं गोपिन ग्वाले सब ही।
मेरी भी यही दशा कर दो, विश्राम प्रदान तो कर जाओ ॥
है तीर्थ शिवोम् सुने मुरली, और मन आनंद मनाता है।
परगट होकर मेरे सन्मुख, मुरली से मस्त बना जाओ ॥

विनय

137. घट ही छुपा है प्रियतम मेरा ।
अलख निरीह अनामी प्रभुजी, पाया नाम है तेरा ॥
पीव ही व्यापक सर्व बना है, हर घट वही समाया।
कर्ता हर्ता भर्ता तू ही, एक सहारा तेरा ॥
करो कृपा हे मेरे प्रभुजी, तुमरे ताई तड़पूं।
मैं पाऊं अंतर में दर्शन, जलवा देखूं तेरा ॥
जागो प्रभुजी, नाद हो परगट, सुनूं लीन हो जाऊं।
रमी रहूं मैं नाद निरंतर, शब्द सुनूं मैं तेरा ॥
करो प्रकाश मेरे अंतर में, तम भागे सारा ही ।
हो आलोकित मनवा मेरा, नेह मेरे मन तेरा ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रियतम, मन लागा चरणों में ।
सिमरूं नाम पीव प्यारे का, मनवा बना है तेरा ॥

138. निराकार आकार धरे है, वह ही जग भरमाए ।
मन माहीं संकल्प करे है, भाव हृदय प्रकटाए ॥
करता जाए जगत अनेकों, फिर उनको वह देखे।
लीला अपनी आप ही पेखे, अंतर में हुलसाए ॥
करनी अपनी आप ही जाने, दूजा नहीं पछाने।
जा पर किरपा उसकी होवे, भेद है खुलता जाए ॥
पुस्तक पढ़ि पढ़ि थाकी हारे, अंत किसे न पाया।
नाहीं जान सका है कोई, किरपा बिन क्यों पाए ॥
पुरुषारथ तो भेद न खोले, भेद तो भेद ही रहता।
कृपा बिना है खुलता नाहीं, पच पच के मर जाए ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, किरपा मो पर राखो ।
दर्शन तेरा मैं भी पाऊं, माया तृष्णा जाए ॥

139. मन की व्यथा तो मैं ही जानूं, या जिसका विरहा है।
अंतर्यामी प्रभु है मेरा, जानत वही व्यथा है ॥
नाम जपूं परमेश्वर का है मैं, हरदम लीन हूं रहती।
अंतर टीस है उठती रहती, जानत वही व्यथा है ॥
बिकी प्रभु के हाथों मैं हूं, दूजा और है नाहीं ।
अब तो हो गई राम प्रभु की, जानत वही व्यथा है ॥
सद्गुरुदेव कृपा है कीनी, अंतर नेह जगाया।
हूं मतवाली राम मेरे की, जानत वही व्यथा है।
मौज प्रभु की दीखत सब ही, कण कण राम समाया ।
पीड़ा राम की व्यापे मन में, जानत वही व्यथा है ॥
तीर्थ शिवोम् है पीव मेरा अब, रहत समाया मन में।
करो कृपा अब मेरे प्रभुजी, जानत तुम्हीं व्यथा है ॥

140. हे माँ शरण में आया, बिगड़ी बना ही दीजो।
कर्मों से मेरे बिगड़ी, इनसे छुड़ा ही दीजो ॥
अंतर प्रकट तू हे मां, हो किरियाशील मन में।
लीलाएं भांति भांति, तन में करा ही दीजो ॥
शक्ति तेरी अलौकिक, देती गति जगत को ।
मन में वही प्रकाशित, अनुभव करा ही दीजो ॥
मैं खा रहा हूं गोते, मैं खा रहा थपेड़े।
इस जगत के भंवर से, मुझको निकाल दीजो ॥
मन में जमा है बैठा, यह जगत जो अनूठा ।
पल पल मुझे सतावे, इससे बचा ही लीजो
शिवओम् है पुकारे, यह अर्ज है गुजारे ।
मुझको तेरा सहारा, अपना बना ही लीजो ॥

141. तज तुम चरन कहां मैं जाऊं।
और भरोसा जग न दीखत, जहां शरण मैं पाऊं ॥
तुम सा दीनदयाला को है, जो दीनन दुख हरता।
एको तुम ही ऐसे प्रभुंजी, तुम सो ही सुख पाऊं ॥
गुरु रूप में तुम ही परगट, अन्तर्जोत जगती ।
लीला करते अजब अलौकिक, किस द्वारे मैं जाऊं ॥
तुम ही हरते अहं जीव का, मन को निर्मल करते।
ऐसे कृपा निधान धनी को, छोड़ कहां मैं जाऊं ॥
मुझको दूजा को न दीखत, दुख दूजन के काटे ।
काटन हारे तारनहारे, तुम पर बलि बलि जाऊं ॥
तीर्थ शिवोम् शरण में आया, त्याग, सभी की आशा ।
तुम ही तारो, तुम ही मारो, केवल तुमको ध्याऊं ॥

142. हे प्रभु मोरी विनती सुन लो, कृष्ण गोपाल मुरारे।
पावन पुनीत हो स्वामी मेरे, हे अखियों के तारे ॥
दुख झेलत हूं मिथ्या जग में, कोई नहीं सहारा ।
एक भरोसा तुमरा प्रियतम, तुम ही हो रखवारे ॥
दर दर भटका, बन बन डोला, कोई मीत न पाया।
हुआ निराश जगत में जब मैं, आया तुमरे द्वारे ॥
छूटन चाहूं जग भोगों से, पर मैं छूट न पाता।
मैं तो लिप्त बना हूं ऐसा, देखत जग झनकारे ॥
कृपा करो हे मेरे प्रियतम, जग बंधन हो ढीला ।
लगा रहूं चरणों में तेरे, आशा मन में मेरे ॥
अब तो शरण तुम्हारी आया, तीर्थ शिवोम् पुकारे।
चरणों माहीं माथा टेकूं, गोवर्धन गिरधारे ॥

143. प्रभु मोरे मनहिं विराजो आय ।
मन में जब तुम मेरे प्रियतम, सुख ही सुख छा जाए ॥
अंतर तुमरो प्रेम घना है, तुम मेरे मन भाते।
अरज सुनो प्रभु मोरी अब तो, मन शीतल हो जाए ॥
हरदम तुमरी बाट निहारूं, तेरा ध्यान घरूं मैं ।
कृपा करो हे मेरे गिरिवर, जिया मोर अकुलाए ॥
जब जग अपनी ओर बुलाए, मो को नाहीं भावत ।
मेरा मन तेरे संग राता, ताही में सुख पाए ॥
अंतर आप बजाओ वंशी, सकल आनंद बखेरो ।
मुरली तान बांध, मन लेवे, प्रेमामृत बरसाए ॥
तीर्थ शिवोम् विनय यह मेरी, मन अवतार धरोजी ।
अंतर असुर संहारो प्रभुजी, दुविधा सब मिट जाए ॥

144. हरि मैं कबसे खड़ा तेरे द्वारे ।
तेरा ध्यान तेरा ही सुमिरन, तेरे एक सहारे ॥
जैसे तारे पतित अनेकों, मो पर किरिपा कीजो ।
विनय करत हूं तेरे आगे, निस दिन सांझ सवेरे ॥
यह ही विरद तुम्हारो प्रियतम, सब को इसको जाने।
ता ते शरण तुम्हारी आया, हे प्रियतम करतारे ॥
तारनहार प्रभु मेरे हो, मुझ पर कृपा नहीं क्यों ।
मैं तो पापी नीच कुकर्मी, तारो प्रभु हमारे ॥
आश निराश हुई है जाती, धीरज जाए टूटा।
आओ प्रियतम वेग उबारो, डूबत रहा मंझारे ॥
तीर्थ शिवोम् पड़ा चरणों में, राख लेयो प्रभु मोरे ।
करत विनय है श्री चरणों में, तुमको रहा पुकारे ॥

145. मैं तो भूलनहार प्रभुजी, भूले मैं न जानूं।
तुम किरपालु दीन दयालु, मैं तो कुछ न जानूं ॥
उलुक समान बना मैं अंधा, दिन में कछु न सूझत ।
सूर्य प्रकाशित होत रहे, पर मैं परकाश न मानूं ॥
तुम दाता, तुम देवन हारे, सब सुविधा तुम कीनी।
पर किरपा मैं जानत नाहीं, नाहीं उसे पछानूं ॥
मैं कृतघ्न बना हूं ऐसा, जानत कुछ भी नाहीं ।
तुम तो अपना विरद संभालो, एक तुम्हें ही जानूं ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरे, रक्षक सब जीवों के।
कृपा करो अब दीन हीन पर, किरपा ही को जानूं ॥

146. बालम कहां गए तुम, मुझको न छोड़ जाना।
दर पर पड़ी हुई हूं, मुंह मोड़ तुम न जाना ॥
घर बार मैंने छोड़ा, जग से किया किनारा।
तेरा ही है सहारा, मुझको न भूल जाना ॥
आसूं तो मेरे देखो, हिरदय दिखाऊं तुमको।
बेहाल हाल मेरा, दर बंद कर न जाना ॥
मालिक जहान के हो, घर दूर बहुत तेरा ।
मारग है टेढ़ा मेढ़ा, मुझको गिरा न जाना ॥
हिरदय दर्द लिए हूं, नयनों से नीर बहते ।
तुम बिन न कोई अपना, मुझको हटा न जाना ॥
शिवओम् हूं दुखारी, पर प्रीत तेरी मन में।
तेरे दरस की प्यासी, दर्शन करा ही जाना॥

147. हरि जी, तृष्णा किस विधि जाए।
ऐसा कौन उपाय करूं मैं, मन की ग्रन्थी जाए ॥
आशा एक यदि हो पूरन, मन दस नई उठावे ।
घृत से ज्यों अग्नि न बुझती, त्योंही तृष्णा बढ़ाए ॥
साधन करते करते जीवन, निकल गया सारा ही ।
तृष्णा अभी गई न मन से, मांग नई नित लाए ॥
तृष्णा से तृष्णा बढ़ती है, छूटन कौन उपाय।
तुम ही कृपा करो परमेश्वर, मन से तृष्णा जाए ॥
सद्गुरुदेव कृपा से परगट, कृपा प्रभु की होती।
तब ही मन से तृष्णा छूटे, मन निर्मल बन जाए ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, शरण पड़ा मैं तेरी ।
मनवा श्री चरणों में लागे, तृष्णा दूर भगाए ॥

148. प्रभु मैं दीनन का सरताज ।
हीन मलीन अति पापी हूं, हाथ में तेरे लाज ॥
तुमरी कृपा अहेतुक प्रभुजी, गुण अवगुण नहीं देखे।
मैं हूं शरण तुम्हारी आया, पत राखो महाराज ॥
नीच कर्म सारे ही करता, भला बुरा न सोचूं ।
विषयासक्त बना मेरा मनवा, हे राजा अधिराज ॥
मैं अंधा अविवेकी मूरख, भोगों में ही रत हूं।
किरपा तेरी का अधिकारी, तुम ही मेरे ताज ॥
दीन दुखी को पार लगाना, यही है मौज तुम्हारी।
मो सम दीन जगत में नाहीं, यही तुम्हारा काज ॥
तीर्थ शिवोम् दीन हीन है, किरपा का अभिलाषी ।
यह ही विनय तुम्हारे आगे, हे मेरे सरताज ॥

149. दीन दयाल शरण मैं तेरी ।
ग्यान ध्यान पूजा न जानूं, केवल शरण मैं तेरी ॥
काम क्रोध रत लोभ मोह में, जगत बिना न सूझे ।
इनसे कैसे बचूं कृपालु, केवल शरण मैं तेरी ॥
तुम ही शोक मिटावन हारे, यह ही विरद है तेरी ।
तुम बिन काटे न कोई दुख, केवल शरण मैं तेरी ॥
जगत विषय दुख देत बहुत ही, बड़े ही अत्याचारी ।
कैसे काटूं, कैसे भागूं, केवल शरण मैं तेरी ॥
तेरे बिना न कोई जग में, देवे शरण मुझे जो ।
आश लिए मन ही मन में हूं, आया शरण मैं तेरी ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, तुमरा एक भरोसा।
और सहारे सारे मिथ्या, केवल शरण है तेरी ॥

150. आशा लिए दुआरे तेरे, कबकी रही रही पुकार प्रभु ।
मन में आश तेरे दर्शन की, सुन लो हाहाकार प्रभु ॥
शंकाओं ने मुझको घेरा, दुविधाएं निर्मूल करो ।
पड़ी दुआरे नीर बहावत, नहीं बचावनहार प्रभु ॥
भवसागर में गोते खाती, बीच भंवर में डूब रही।
कौन बचाए मुझको आकर, पड़ी रही मझधार प्रभु ॥
किसे पुकारूं, किसे बुलाऊं, सुनने हार नहीं कोई ।
तुम ही केवल मेरे रक्षक, कर दो बेड़ा पार प्रभु ॥
मैं आई हूं शरण तिहारी, शरण कहीं न है पाई।
अब तो एक सहारा तुम ही, जग से गई हूं हार प्रभु ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, एक तुम्ही रखवारे हो ।
अब तो आन बचाओ मुझको, तुम ही खेवनहार प्रभु ॥

उर्दू

151. जब चली दुनिया से डोली, देखत सब रह गए ।
अब तक यहां बैठे थे वह, पर अब कहां को है गए॥
ढूंढता फिरता जमाना, पर नजर आए नहीं।
अब तो डोली चल बसी, बस है जहां से वह गए ॥
इक दिन उठेगी ही यह डोली, इस जहां से जीव की।
पर नहीं है याद उसको, याद आए जब गए ॥
अगर चाहे जो भला, तो याद रख तू मौत को ।
मौत ही रस्ता दिखाए, दिन तो दुख में ही गए ॥
जिंदगी बेकार न जाए, कहीं बेकार में।
जिंदगी का क्या भरोसा, दिन तो है अब लद गए ॥
शिवओम् है यादे प्रभु ही, इक सहारा जिन्दगी ।
सोचते ही सोचते है, दिन निकलते ही गए ॥

152. मैं तड़पती ही रही, नाम तेरा ले ले कर ।
तुमको एहसास नहीं, तुम पर फिदा हूं मैं तो ॥
तेरा ही नाम लिए, तुझको पुकारूं हरदम ।
तू तो सुनता ही नहीं, बेजार हूं कितनी मैं तो ॥
दिल को अच्छा न लगे, दुनियां का नजारा कोई ।
वह तो तुम में ही लगा, महवे तुम्हीं हूं मैं तो ॥
दिल में इक हूक उठे, तेरे लिए ही प्रीतम ।
कुछ भी मैं कर न सकूं, लाचार हूं कितनी मैं तो ॥
तेरे ही दर पह पड़ी, करती इंतजार तेरा ।
मैं तो तेरे ही लिए, तुम पह ही शैदा मैं तो ॥
हूं मैं शिवओम् बनी, फिरती हूं तेरे ही लिए ।
तेरे बिना है न कोई, जिसको पुकारूं मैं तो ॥

153. है तमन्ना यह मेरी, लब पह तेरा नाम रहे।
जिन्दगी तेरे लिए, तेरा ही बस काम रहे ॥
याद तेरी में रहूं, चाहे फिजां कैसी हो ।
हर लम्हा तेरे लिए, हर सुबह शाम रहे।
हिज्र तेरे तड़पने में, है मजा हासिल मुझको ।
लज्जतें जग में कहां, वह तो बद-काम रहे ॥
यह तेरी मेहर ही है, तेरी तरफ हूं मायल।
तालिसे हक में बना, हम तो बेलगाम रहे ॥
शैदा शिवओम् हुआ, हुस्न पर तेरे जानां ।
दिल लगा तुम ही में, तेरा ही मुकाम रहे ॥

154. मैं तलबगार हूं पीने का, है कौन पिलाए जाम मुझे ।
ऐ साकी तेरे दर आया, दे भर दे आज तू जाम मुझे ॥
पीए बिन नशा नहीं होता, और दिल से फिकर नहीं जाता।
दे आज पिला दे जी भर कर, और करने दे आराम मुझे ॥
पीने को आज नहीं पाया, और मस्ती से महरूम हूं मैं ।
मय हुई नहीं हासिल अब तक, कर देती है बेकाम मुझे ॥
फरियाद यह मेरी तुमसे है, अब देर न कर, तू देर न कर।
जी खोल के जाम मुझे भर दे, न कर देना नाकाम मुझे ॥
यह जामे शराब ही नेमत है, यह जाम ही रस्ताए हक है।
है जाम नहीं आराम नहीं, है नहीं चाहिए दाम मुझे ॥
शिवओम् खुदा रखे तुमको, तस्कीनो कर्म रहे दिल में।
मैं आया भर के पीने को, दे देना भर के जाम मुझे ॥

155. मयखाने से पीकर निकला, है अजब सरुर हुआ मुझको ।
है दुनिया तो छोटी दिखती, पर नहीं गरूर हुआ मुझको ॥
दिल तो है मस्ती में डूबा, है फिकर नहीं कोई मुझको ।
रंगीन यह दुनिया दिखती है, है नहीं फतूर मुझको ॥
यह दादे खुदा है महर ही है, है नशा इबादत का मुझको ।
तुम चाहो जिसे बड़ा कर दो, यह कर्म हजूर किया मुझको ॥
मुर्शिद मैं पाया पूरा है, जो आलिम फाजल नेक भी है।
है पूरा किया उसी ने है, रस्ता दिखलाया है मुझको ॥
अब खुशियां है भरपूर मुझे, और दिल में छाई शादी है।
अब दुनिया से है क्या लेना, भरपूर किया उसने मुझको ॥
शिवओम् शुकरिया मुर्शिद का, जो रूहानी इक हस्ती है।
है बदल दिया जिंदगानी को, खुशहाल किया उसने मुझको ॥

156. मैं बैठी हूं नाम तेरे पर, तुमको नहीं ख्याल मेरा ।
मैं रोऊं और तड़पूं हरदम, पता न तुमको हाल मेरा ॥
ढूंढ फिरी सारा जग तुमको, पता नहीं तेरा पाया।
हार गई मैं चलते चलते, पता नहीं एहवाल तेरा ॥
कोई ठौर ठिकाना नहीं, कहां छुपा तू है बैठा।
मैं तो हारी खोजत तुमको, पर न पाया हाल तेरा ॥
सुनते हैं तुम बड़े दयालु, जीवों पर कृपा करते।
पर मेरे पर ध्यान न तेरा, ये ही है तो हाल तेरा ॥
काय करूं कुछ समझ न आए, खोज निकालूं मैं तुमको।
तेरा तो घर द्वार नहीं है, कैसे पाऊं हाल तेरा ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे प्रियतम, अपना रूप दिखा दीजो।
मैं तो ढूंढ सकूं न तुमको, न मैं पाऊं हाल तेरा ॥

157. परदे के बाहर आ जा, परदा नशीं ऐ दिलबर।
तेरे दर्स की प्यासी, घूंघट हटा ऐ दिलबर॥
तेरे दर्स की खातिर, सजदे किए हैं मैंने।
की मैंने है इबादत, मुखड़ा दिखा ऐ दिलबर॥
भटकी फिरी हूं बन बन, तुझको पुकारती मैं।
तुझको तरस न आया, अब मान जा ऐ दिलबर॥
जो भूल की हैं मैंने, उसका पता है मुझको।
पर बेनयाज़ तू है, अब तरस खा ऐ दिलबर॥
दिल तड़पता है मेरा, सूझे नहीं किनारा।
मंझधार में पड़ी हूं, अब पार कर ऐ दिलबर॥
शिवओम् मैं पड़ी हूं, तेरे ही दर पर आकर।
अब छोड़ सारे नखरे, दीदार दे ऐ दिलबर॥

158. मैं तलबगार नहीं, फानी जहां में कुछ भी।
अपने महबूब के, दीदार की ख्वाहिश ही है॥
अरसाए जिन्दगी जो, पास रहा है मेरे।
बेकार न हो जाएं कहीं, यह तो ख्वाहिश ही है॥
मैंने इबादित भी करी, सजदे हजारों मैं थे।
मेरा महबूब मिले, यह तो ख्वाहिश ही है॥
तलब दुनिया की बनी, रस्ते का पथर जो है।
यह हवस भी न रहे, यह तो ख्वाहिश ही है॥
जग तमन्नाओं के हरस, के कैदी हैं जो।
मैं तो कैदी न बनूं, यह तो ख्वाहिश ही है॥
मैं तो शिवओम् फिदा हूं, रस्ताए हक ये ही है।
मुझको दीदार मिले, यह तो ख्याहिश ही है॥

159. तुम आओ न आओ तेरी मौज है,
मैं तो बैठी हूं दिल दे तुम्हारे लिए।
यह जमीं धन यह मन है, तुम्हारे लिए,
बस तुम्हारे लिए ही तुम्हारे लिए ॥
दिल तो दे ही दिया अपना है कुछ नहीं,
है अब तुम्हीं तुम तो हो मेरे ऐ प्रियतम ।
यह जो जीवन धरोहर तुम्हारी ही है,
सांस है यह तेरा, कर्म तेरे लिए॥
अब उठाओ गिराओ तुम्हीं पर यह है,
मैं तो राजी हूं जैसी रजा हो तेरी ।
मेरा अपना कोई अब तो है ही नहीं,
सब ख्यालों में तुम हो तुम्हारे लिए ॥
मैं तो रहती हूं हरदम तेरी याद में,
याद में से निकल के न जाना कहीं ।
तब मैं रोऊंगी तड़पूं सहारा नहीं,
जिन्दगी यह तुम्हारी तुम्हारे लिए ॥
आशियां अब तो मेरा तेरी याद है,
तुम बिना है न कोई भी अपना मेरा ।
अब तो तुम ही हो सैंया मेरी जिन्दगी,
मैं पुकारूं तुम्हें ही, तुम्हारे लिए ॥
है शिवोम् अब पड़ी हूं तेरे दर पह मैं,
मैं तो हट के न जाऊं कहीं भी किधर ।
लाज तुमरे ही हाथों में है अब प्रभु,
अब तुम्हारे लिए हूं तुम्हारे लिए ॥

160. मौत की आगोश में, जाना पड़े हर एक को ।
बच बशर कोई न पाया, लाजमी हर एक को ॥
सब कोई भूले है फिरता, वक्ते आखिर सिर पह है।
पर प्रभु तो भूलता न, लाजमी हर एक को ॥
नेको-बद में ही है उलझा, जग में आकर आदमी।
पर सभी कुछ छोड़ जाता, लाजमी हर एक को ॥
खिदमत प्रभु की न करे, डूबा खुदी में ही रहे।
तब उसे मिलता है दोजख, लाजमी हर एक को ॥
तू प्रभु की याद कर, महवे- इबादत ही रहे।
पार होगा बेड़ा तेरा,लाजमी हर एक को ॥
शिवओम् भूला न रहे तू, इक दिन तुझे जाना ही है।
वक्ते-आखिर बच न पाए, लाजमी हर एक को ॥

161. इश्क चाहे राम का तो, दूर कर तू अहं को ।
माया परदे सब हटेंगे,दूर कर तू अहं को ॥
जब तक खुदी अंदर तेरे, तू भटकता है जगत में।
साफ हिरदय तब बने है,दूर कर तू अहं को ॥
है बंधा फिरता जगत में, नेको बद न सोचता ।
साफ हिरदय गर नहीं है, दूर कर तू अहं को ॥
जाम उलफत का तू पी, और रह नशे में चूर तू ।
गर यह हासिल करना चाहे, दूर कर तू अंह को ॥
मैं रहा समझा तुझे, रस्ता न कोई दूसरा ।
मेहरे हक हासिल जो करना, दूर कर तू अहं को ॥
हे प्रभु तू मेहर कर, शिवोम् अर्ज गुजारता ।
क्या करूं कैसे करूं, जो दूर मेरा अहं हो ॥

162. क्या क्या नहीं सहे हैं, दुनिया के गम हजारों ।
पागल कहे जमाना, गिनती मेरी बिमारों ॥
दुनियां तो तंग दिल है, सोचे अजब तरीके।
समझा मुझे न कोई, तानें कसें हजारों ॥
मैंने भला किया है, हर बश्र का जहां में।
उलटा मुझे लताड़े, बदनाम कर हजारों ॥
तुम पह ही मैं बिकी हूं, तुम ही हो मेरे साजन ।
परवाह न किसी की, वारूं जहां हजारों ॥
तुमसे ही लौ लगी है, दुनियां से वासता न।
हो मेहर तेरी मुझ पर, तेरे करम हजारों ॥
शिवओम् मैं पुकारूं, तुम को ही मेरे प्रीतम ।
अब लाज रखना मेरी, दुनियां कहे हजारों ॥

वियोग

163. जब हरियाली मैं देखत हूं, हरियाली याद है आ जाती।
मन में है पी की हुक उठे, अन्तर पीड़ा है छा जाती ॥
पी का घर अति ही सुन्दर है, फूल खिले भान्ति भान्ति।
हैं चारों दिशा प्रकाशित ही, घर पी की याद है आ जाती ॥
वह घर तो अब है छूट गया, और पड़ी जगत मिथ्या माहीं ।
कब मिलसी सेज है प्रियतम की, मन में तो टीस है उठ जाती ॥
मन अन्दर ही दुख पावत हूं, प्रियतम की याद बनी रहती।
और याद भी घर है आ जाता, तब मन में मस्ती छा जाती ॥
हे प्रभु कृपा अब मो पर हो, मैं दुखी अति ही भारी हूं।
जग विषयन मुझे सतावत है, मन चंचलता है आ जाती ॥
हूं तीर्थ शिवोम् मैं तड़प रही, है राह न सूझ रही कोई ।
अब तुमरी शरण पड़ी प्रियतम, हिरदय में कसक है आ जाती ॥

164. प्रभु विरह का सुख है पाया, मन अनुराग है जागा ।
है अगन वियोग की हिरदय माहीं, मन सुमिरन में लागा ॥
सदगुरुदेव कृपा बहु कीनी, मिथ्या जगत दिखाया।
अन्तर पीड़ा जाग उठी है, विषय भोग सब भागा ॥
जग सुख से वियोग का दुख है, अधिक लुभाये मन को ।
हिरदय में है तड़प मिलन की, उसमें ही मन लागा ॥
अब तो हरदम प्रभु सुहावे, मन जग में न जाए।
तड़पत रहे जले विरह में, हरदम बना विरागा ॥
मेरा राम मुझे कब मिलसी, यह तो राम ही जाने ।
मैं तो भई वियोगी जोगन, राम में ही मन लागा ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे हे प्रियतम, तुमरी तुम ही जानो।
मैं तो तुमरे नाम बिकी हूं, मेरा तू ही राजा ॥

165. दुख विरह का होत है भारी ।
चैन उडाए देत है मन का, हरदम रहत अजारी ॥
मनवा तो है लागत नाहीं, रहता दुखी निरन्तर ।
आश लगी रहती प्रीतम की, ऐसी विपदा मारी ॥
औषध है कोई न लागत, यह तो रोग है मन का।
काय करे है बेद बेचारा, हाथ न आत बीमारी ॥
राम नाम ही है इक औसध, मिले जो सदगुरु पाहीं ।
चेतन नाम मिले है तो ही, कटता संकट भारी॥
दिन विरह के जात है बीतत, राम प्रकट होवत है ।
माया तृष्णा जाए मन से, कटत वियोग है भारी॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, विरह अगन जलावे ।
करो कृपा दीन हीन पर, काटो विपदा भारी॥

विरह

166. मन से न जाये, याद तेरी आए।
कैसे तुम सैंया, फिर भी न आए ॥
मैं तो मतवारी भई, जगत से न्यारी भई।
अब तो मैं हारी गई, फिर भी न आए ॥
कैसे तुम मन के हो, देखत तो तन के हो ।
रही मैं पुकार तोहे, फिर भी न आए ॥
अब समझाऊं कैसे, हृदय दिखाऊं कैसे।
तुमको मनाऊं कैसे, फिर भी न आए ॥
मैं तो हिरदय से तुम्हें, चाहत हूं हरदम ।
पर तुम देखो नाहीं, फिर भी न आए ॥
आओ आओ, मान जाओ, बीती बातें भूल जाओ।
शिवओम् आओ-आओ, फिर भी न आए ॥

167. मैं मनुहार करूं तेरी सजना, अब तो मान भी जाओ।
जैसी कैसी दर पह तेरे, प्रियतम दर्श दिखाओ ॥
कब की रही मनावत तोहे, बीती जात उमरिया ।
तरस खाए आवरण हटाओ, मुख तो अब दिखलाओ ॥
क्या क्या नहीं किया है मैंने, तुम्हें मनाने बालम ।
पर तुम नहीं पसीजे कबहूं, अब तो बाहर आओ ॥
दर को बन्द किए बैठे हो, काहे खोलत नाहीं ।
बारम्बार रही खटकाए, तरस कभी तो खाओ ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे साजन, जोबन बीता जाए।
सेज तुम्हारी मिलना होए, अब तो गले लगाओ ॥

168. पल भर चैन प्रभु बिन नाहीं, हरदम तड़पत रहता ।
हिरदय विरह अगन जलत है, नयनन जल है बहता ॥
पीय की याद बनी ही रहती, लीन उसी में मनवा ।
इसकी अब परवाह नहीं है, जग समझत क्या रहता ॥
समझे, कहे, करे कुछ भी वह, चिन्ता मोहे काहे ।
मिथ्या त्याग, चढ़ा रंग सांचा, प्रेम प्रवाह है बहता ॥
अन्तर माही उदित विरह है, मीठा दर्द उठे है ।
उसमें ही अब सुख है मोहे, विरह ही मन है रहता ॥
सद्गुरु मोहे किरपा कीनी, दीना पंथ दिखाए ।
चेतन अन्दर किया प्रकाशित, आवत मो न कहता ॥
तीर्थ शिवोम् है छूटा जाए, हाथ से यह संसारा ।
नाचूं गाऊं मौज मनाऊं, संग पिया है रहता ॥

169. तनवा छिन छिन छीजे मोरा ।
माया भरी, अहम न टूटा, जीवन बीते मोरा ॥
यह मन जात विषय के ताई, बारम्बार हटाऊं ।
हठी अधर्मी पापी बनया, ऐसा मन है मोरा ॥
मै खोजत हूं पुस्तक पन्ने, वहां प्रभु तो नाहीं ।
प्रियतम अन्तर माहीं विराजे, हिरदय ढका है मोरा ॥
तीरथ तीरथ खोज फिरी मैं, घंटे बहुत बजाए।
जब तक घंटा बजा न अन्तर, मिलता प्रभु न मोरा ॥
हे प्रभु किरपा तेरी केवल, परगट प्रेम कराए।
प्रेम ही रीझे सजना आपे, संशय जाय मोरा ॥
तीर्थ शिवोम् हूं भूली फिरती, सजना दीखत नाहीं ।
अब आकुल व्याकुल मनवा, लागत मन न मोरा ॥

170. जग अन्जाना क्या जाने है, दशा जो मेरे मन की।
हिरदय में इक टीस उठे है, हालत बुरी है तन की ॥
या तो मन की मन ही जाने, या जाने जा की है पीड़ा।
बोल सकूं ज्ञानी जन आगे, बात नहीं जग जन की ॥
प्रभु है मेरा अन्तर्यामी, घट घट माहीं व्यापक ।
है बात छुपी न कोई उससे, जानत वह हर मन की ॥
प्रभु विरह में तड़पत मनवा, पीड़ा मैं ही जानूं।
घुटती अन्दर ही रह जाऊं, बोल सकूं न मन की ॥
कौन मिलावे सजना मेरा, कोई राह दिखाए।
खोजत फिरती बन बन पग पग, लिए छुपाए मन की ॥
तीर्थ शिवोम् दशा जो मेरी, मेरी मैं ही जानूं ।
जग तो हंसता, बातें सुनकर, समझत नाहीं मन की ॥

171. हिरदय दर्द लगा प्रियतम का, विरह अगन सतावे ।
इक पल मनवा चैन न पावे, पी की याद ही आवे ॥
औषध कोई काम न आवे, तड़पत रहूं मैं हरदम ।
सतगुरु किरिपा ही इक औषध, विरह अगन बुझावे ॥
जब से छूटा सजना मोरा, रस भोगन मन लागा।
जग सुख देख लिये हैं सारे, प्रियतम ही पावे ॥
अब तो विरह हृदय जलाए, हरदम पल पल छिनछिन।
कब मिलसी मेरा साजन आए, हृदय मोर अकुलावे ॥
जब तक सांस चले है अन्तर, तब तक आशा लागी ।
आशा पीय मिलन की साचे, बाकी मन पतयावे ॥
तीर्थ शिवोम् हृदय में अगनि, नयनन पानी बरसे।
जल अग्नि का मेल अनोखा, पी यह हटावे ॥

172. कब तक मैं राह देखूं, कुछ तो बता दो मुझको ।
कब की शरण पड़ी हूं, अब तो उठा लो मुझको ॥
उठ मैं स्वयं न पाऊं, शक्ति नहीं है मुझमें ।
तुमसे ही शक्तिशाली, किरिपा करो है मुझको ॥
जग में उलझ रही हूं जग के लपेट में हूं।
मैं हूं निकल न पाती, अब तो निकालो मुझको ॥
सब आश छोड़ी जग की, चरणों में तेरे आई।
सब ही सहारे झूठे, दे दो सहारा मुझको ॥
अब मुंह न फेर लेना, तुमको ही मैं निहारूं ।
तुझ पह ही आस मेरी, अब पार कर दो मुझको ॥
शिवओम् मैं पड़ी हूं, मारग पह तेरे प्रियतम ।
अब कर कृपा की वर्षा, रख लो शरण में मुझको ॥

173. बैठा रहूं, दर पह तेरे, तेरा ही नाम जपा करूं।
करूं प्रतीक्षा द्वार खुलन की, आशा मन में यही करूं ॥
प्रातः हो या संध्या बेला, मन तेरे में लगा रहे ।
मेरा ध्यान निरन्तर तेरा, तेरे द्वार पुकार करूं ॥
जग को छोड़ तेरा दर पकड़ा, और कोई तृष्णा नाहीं ।
मुझे चाहिए एक तुम्हीं हो, तुम बिन कुछ न आश करूं॥
यश अपयश छोड़ा संसारा, तेरे मिलन लिए ही मैं ।
करना नहीं किनारा प्रभुजी, किसके आगे हाथ धरूं ॥
टेर सुनो हे मेरे प्रभुजी, कब की तुम्हें पुकार रही।
केवल एक तुम्हीं तो मेरे, तुम पह ही मैं अर्ज करूं ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे सजना, कब की मैं द्वारे ठाड़ी।
द्वार उघारो दर्शन दीजो, मन को चरणों पर वारूं ॥

174. जब कारी बदरिया देखत हूं, है याद तेरी मन में छाती।
तब खोजन लगती मैं तुमको, हिरदय में पीड़ा भर जाती ॥
हूं ठोर ठोर और डगर डगर हूं, तुझे पुकारत डोल रही।
वह श्याम गयो है कौन गली, हूं पूछत जात रही यही जाती ॥
सावन भी बीतो जाए है, है ठौर ठिकाना मिला नहीं।
खोजत थक हारी मैं प्रियतम, मन में ढारस न रख पाती ॥
अब कृपा बिना थिरता नाहीं, वह ही किरपा करनारा है।
मैं तो अज्ञानी नारी हूं, न कोई बात समझ पाती ॥
प्रियतम ही आए, बचाए मुझे, न कोई मारग पास मेरे ।
मन बुद्धिहीन बनी बैठी, कोई भी बात न बन पाती ॥
हूं तीर्थ शिवोम् तेरे चरणी, अब आओ प्रभु बचा लीजो।
दुखियारी अबला नारी तो, है विनय भी नाहीं कर पाती ॥

वियोग

175. मैं तो तड़प रही दिन राती, साजन अजहूं न आए।
जैसे बीतत जात उमरिया, जिया मोर घबराए ॥
पीव पीव रट रैन दिवस है, पीव ही मन को भाए।
बिन पिया मन लागत नाहीं, हृदय मोर अकुलाए ॥
सावन आए, बीते जाए, निकलत जीवन जाए।
काय करूं, पिया बिन मनवा, हरदम घटि घटि जाए ॥
तिमिर घना ही चहूं दिशा है, पीव नजर न आवे ।
झांकत झांकत थाके नयनां, अब तो रहा न जाए ॥
अंग शिथिलता उदय हुई है, करा कहा न जाए।
पर प्रियतम तो आवत नाहीं, थिर न हृदय रहाए ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, लगा रहे पिव ताई ।
कभी तो तरस खाएगा प्रियतम, अपने को प्रगटाए ॥

176. हम जीव अति ही तुच्छ बने, तुम तो प्रभु ब्रह्म स्वरूपा हो ।
तुम करता पालक जग के हो, तुम ही आनन्द स्वरूपा हो ॥
न गति तेरी है समझ पड़े, तुम दीनदयाल कृपाला हो ।
हम भेद तुम्हारा क्या जाने, तुम प्रियतम प्रेम स्वरूपा हो॥
तुम त्रिगुणातीत अनन्त प्रभु, माया न तेरी जान सकूं।
तुम दीन हीन हितकारी हो, तुम भेद-अभेद स्वरूपा हो ॥
तुम रक्षक पालक जग के हो, तेरा ही सब विस्तार प्रभो ।
न तुमको पकड़ सके कोई, तुम रूप-अरूप-स्वरूपा हो ॥
हम तो अज्ञानी बालक हैं, है पड़े हुए जग बंधन में।
हैं मिलन को तेरे तरस रहे, तुम ज्ञानी ज्ञान स्वरूपा हो ॥
है तीर्थ शिवोम् हुआ शरणी, कर जोड़ तुम्हारे चरणों में।
किरपा कर दो, उद्धार करो, तुम ही तो कृपा स्वरूपा हो ॥

177. मोहे पार न उतरा जाए।
फिर फिर डूब जात जल माहीं, ऊपर आए जाए।
तरना मैं न जानूं प्रभूजी, नदिया बड़ी अनूठी।
गहरा ठण्डा जल है इसमें, मगर है खाने आए ॥
गहरी नदिया हिरदय माही, कर्म जहाँ है बैठे।
मैं तो हटा न पाऊं इनको, मो से किया न जाए ॥
मैं हूं रही पुकार तुम्हें ही, आओ पार लंघाओ ।
तृष्णा आशाओं से दूजा, न कोई पार कराए ॥
सद्गुरुदेव कृपा से मैने, मारग तेरा पाया।
तुमरी कृपा बिना यह मारग, मो से चला न जाए॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, शरणागत हूं तेरी ।
आओ पार कराओ मुझको, हो तुम एक सहाए ॥

वन्दना

178. कोई मोहे प्रीतम देय मिलाए ।
पीय मिले मन शीतल होए, अन्तर पीड़ा जाए ॥
मैं तो पड़ी जगत में ऐसी, मारग पीव न सूझे।
तम छाया है मोरे नयना, दीखे नहीं दिखलाए ॥
जिन पी पाया सखी सहेली, वह आनंदित होई।
मैं तो डूब रही जल माहीं दुखड़े बहुत उठाए ॥
अब तो कृपा करो हे प्रीतम, दर्शन मोहे दीजो
तुमसे दर्स भीख मांगत हूं, तरस न अब तक खाए ॥
मैं तो अवगुण भरी हूं नारी, तुम तो दीन दयाला ।
मोरी भूलें ओर न देखो, मन तुम बिन अकुलाए ॥
तीर्थ शिवोम् है मेरे प्रीतम, तुम सा दाता नाहीं ।
हूं मैं शरण तिहारी प्रभुजी, कृपा दृष्टि हो जाए॥

179. तू ही गुरु पति प्रभु मेरा, तू ही एक है अपना ।
जो कुछ तू है, तू ही तू है, प्राण पिआरा अपना ॥
दूजा मुझको और न दीखे, सर्व व्यापक तू ही ।
आशाएं सब तेरे से ही, काहे जग में खपना ॥
देखी ठोक बजाकर दुनियां, हितकर मिला न कोई।
स्वारथ में सब ही को देखा, उचित है जग से हटना ॥
तू ही बंधु बांधव तू ही, तू ही प्राण अधारा ।
मिथ्या जग तो भ्रम है सारा, नाम न इसका रटना ॥
अब मैं समझा तू ही जग में, कण कण माहीं समाया।
तू ही अपना, प्रेम तेरे से, मन तेरे में छकना ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे सजना, मन तेरे संग लागा।
हिरदय माहीं मूरत तेरी, जग में क्या है खटना ॥

180. प्रभु ही त्यागी है बैरागी ।
जगत अलिप्त बना है ऐसा, तृष्णा जात न लागी ॥
सब कुछ कराए फिर भी, न्यारा है वह रहता।
थिति न हो उसकी परिवर्तित, सदा एक रस रहती ॥
माया रचे बनाए जग को, गुण प्रभाव कुछ नाहीं ।
रत रहता है मौज में वह तो नहीं वासना जागी ॥
ताही हरदम मनवा लागा, ममता नहीं सतावे ।
छिन छिन पल पल रहत निरन्तर, प्रीत प्रभु से लागी ॥
प्रभु बिना कल पड़त न मोहे, दूजा नहीं सुहावे ।
एक प्रभु से नेह लगा है, अखियां पथ पह लागी ॥
तीर्थ शिवोम् वैरागी सजना, मेरी ओर निहारो।
दासी चरण पड़ी है तेरे, पीड़ा अन्तर जागी ॥

स्तुति

181. लगन लगी है राम प्रभु से, राम में ही मन जाए।
छोड़ जगत की आशा तृष्णा, नाम प्रभु ही ध्याए ॥
जैसे भंवरा कमल न त्यागे, मंडराता रह जाए।
दूजे जाए कभी न पासे, चाहे प्राण गंवाए ॥
बारम्बार हटावन चाहूं, लगा वहीं पर रहता।
छूटे माया काया प्रभुजी, अन्दर तुम्हीं समाए ॥
नाम मणि दीपक है ऐसा, जले बिना वह बाती ।
अन्दर बाहर करे उजाला, अन्तर ज्ञान जगाए ॥
किरपा सद्गुरु देव ने कीनी, दीपक हाथ दिया जो ।
चलती जाऊं मार्ग प्रकाशित, तम को परे हटाए ॥
तीर्थ शिवोम् मस्त मैं ऐसी, मन आलोकित होया ।
अब तो राम विराजे अन्दर, अन्दर ही सुख पाए ॥

182. प्रियतम तुमसा नहीं है कोई।
माया अन्दर रहते हो तुम, माया छुअत न तोई ॥
अलख अगोचर हो बेअन्ता, पारावार न तेरा।
होकर एक अनेक बना तू, जान सकत न कोई ॥
सिमरे नाम जो तेरा प्रभुजी, अन्तर होत प्रकाशित।
लीला अनुभव देत अनेकों, मन आनंदित होई ॥
सतगुरु किरपा कारण तेरे, मिलन का देखा जग में।
संतों के अधीन हो रहते, पर माया पर होई ॥
जात न पात वर्ण न आश्रम, प्रेम के भूखे तुम हो ।
प्रेम स्वरूप हो मेरे गिरधर, प्रेम से प्रापत होई ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, शरण पडा हूं तेरे ।
नीच हीन अज्ञानी पापी, पार कृपा से होई ॥

183. सुखी होए सत संगत पाए ।
मन मस्ती आनन्द भरा है, कुमति सकल ही जाए ॥
संत जनों बलिहारी जाऊं, जग उपकार करत हो ।
मन मलीन को निर्मल करते, पाप राशि जल जाए ॥
किया अनुग्रह दीनन भारी, दर्शन संत कराया।
धन्य संत जो राम पिआरे, राम से देत मिलाए ॥
भाग बड़ो जो संत मिले है, ताकि सेवा कीजे ।
चेतन नाम, जगत छुटकारा, भव बंधन कट जाए॥
चंचल मनवा थिरता पाए, शोक मोह मिट जाता।
दीनन करत अनुग्रह भारी, शक्ति नाम कमाए॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, नाम दान मोहे दीजो।
नाम जपूं चेतनता पाऊं, अन्तर सुख उपजाए ॥

कीर्तन

184. राम भज राम भज राम भज बावरे।
राम ही से नाता तेरा, राम ही से भाव रे ॥
जगत में भूला बैठा, राम को विसार कर।
राम तेरे काम आते, राम ही से चाव रे॥
राम ही से संग तेरा, राम मन भाता तेरा।
राम रंग राता तेरा, राम मन लाव रे ॥
दिन रात राम जपो, जगत में काहे खपो।
चरणों में चित राख, राम नाम गाव रे ॥
जगत अनोखा देखा, सब में ही धोका देखा।
सत्य एक राम नाम, पार करे नाव रे॥
गुरुदेव कृपा करे, तभी रंग राम चढ़े।
तभी नेह राम लगे, तभी मन भाव रे ॥
तीर्थ शिवोम् जपो, नित्य नाम राम हरि ।

राधा राधा राधा

185. राधा राधा राधा, राधा राधा राधा गाए जा ।
राधा शक्ति राधा शक्ति, राधा शक्ति ध्याए जा ॥
राधा शक्ति कर आराधन, वह ही श्याम मिलाए है।
चंचल राधा जग पतयाए, अंतर उसे जगाए जा ॥
राधा जब है चढ़ती ऊपर, श्याम नगर को जाए है।
नाचे गाए रास रचाए, मन आनंद मनाए जा॥
राधा कृपा बिना न कोई, कृष्ण को सकत जो पाए है।
राधा कर अनुकूल तू अपने, राधा मन अपनाए जा ॥
राधा शक्ति कृष्ण अधारा, इक दूजे से भिन्न नहीं ।
शंकर राम गणेशा राधा, राधा में मन लाए जा ॥
तीर्थ शिवोम् हे राधा रानी, किरिया मोहे पह राखो ।
दर्शन श्याम कराओ, मोहे, लीला निज दिखलाए जा ॥

प्रतीक्षा

186. मैं रोऊं अकुलाऊं हरदय, पीव नजर न आए।
कह गए आवन को बनवारी, अब तक नहीं हैं आए ॥
सिसकत रहूं चैन न आए, अंखियन नींद नहीं है।
काय करूं किसको पुछूं मैं, नजर न अब तक आए ॥
यूं तो हरदम याद बनी है, जमी कोयलिया कूके।
कसक उठे तब हिरदय माहीं, जिवड़ा धड़कत जाए ॥
झरने कल कल करते जब हैं, भाव उठे प्रियतम का ।
फटे कलेजा, नयना रोवत, पी की याद सताए॥
पीव मेरा ऐसा निष्ठुर है, असर न उस पर कोई ।
मैं तड़पू रोऊं अकुलाऊं, बंसी चैन बजाए ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे नयनां, पीव बड़ा निर्मोही ।
मन में प्रेम उठे जब उसके, तभी प्रकट हो जाए ॥

187. राह खड़ी प्रियतम के मैं तो, राह निहारूं ताका ।
कहां, किधर से, कब जाएगा, रोके खड़ी हूं नाका ॥
इधर उधर हूं खड़ी देखती, कहीं निकल न जावे।
अपलक देखूँ, सावधान हो, पता नहीं है ताका ॥
अब तक प्रियतम आयो नाहीं, मन में चैन है नाहीं ।
प्रियतम प्रियतम रही पुकारत, ध्यान धरूं मैं वाका ॥
चारों कोने दृष्टि मेरी, कण कण खोजूं उसको ।
दीखत नाहीं, आवत नाहीं, न कुछ जानत वाका ॥
हिरदय अब तड़पत है मोरा, पिया मिलन के ताई ।
कब आएगा, प्रियतम प्यारा, रूप अनोखा वाका॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे सजना, तड़पत रही विरह में।
कब मिलसी साजन है आए, मन में भाव है ताका ॥

नाम

188. नाम जपन आनंद अनूठा, राम जपे सोई जाने रे।
राम ही राम जपे दिन राती, राम हृदय सोई जाने रे ॥
राम जपन आनंद अनंता, शोक मोह छुड़वा देता।
हरदम मस्ती छाई अंतर, जिन लूटा सोई जाने रे ॥
हर घट, हरे कण राम समाया, राम ही सृष्टि दृष्टि है।
चन्द्र सूर्य और सभी सितारे, जिन देखा सोई जाने रे ॥
राम ही मारे राम ही तारे, राम ही परगट होवे है।
दीखत कभी, कभी न दीखत, जा दीखत सोई जाने रे ॥
राम ही करे करावे जग में, दूजे चेतन नाहीं है।
अंतर राम सदा परकाशित, अनुभव लिया सो जाने रे ॥
तीर्थ शिवोम् राम की लीला, दीखत जग के माही है।
राम बनाए राम समेटे, राम कृपा सोई जाने रे ॥

189. हरि सिमरन सारा जग तारे, जग से लेत उबारे ।
अंध कूप में जीव पड़े हैं, नाम ही पार उतारे ॥
हरि सिमरन सुख देत अनंता, अंतर निर्मल होए।
मन में भाव प्रभु हो जाग्रत, अंतर प्रेम उभारे ॥
जात हैं अष्टपाश हो ढीले, मुक्त जीव होता है।
करत आतमा रमण प्रकाशित, अंतर शत्रु मारे॥
नाम सिमर है मूरख मनवा, काहे समय गंवावे ।
तू पीछे तू पछताए रहेगा, जा तू नाम सहारे ॥
शरण गहे तू राम नाम की, पाप कटेंगे छिन में ।
राम नाम में ही सुख व्यापे, वह ही जग विस्तारे ॥
तीर्थ शिवोम करे जो सिमरन, सुख अनुपम वह पाता।
जीवन सुखी बिताकर जग में, नदिया जात है पारे ॥

पंजाबी

190. उमर गुजार दिती मैं ऐबे, कुज बी हथ न आया।
रोदयां हसंदया खपदयां मैंते, वकत नूं पार लंघाया ॥
दुनिया विच मैं रचया पचया, घर परिवार संभालां ।
नजर न फेरी वल्ल प्रभुदे, जगनूं पल्ले पायां ॥
हथ पैर हुन ढिल्ले होए, मैं थों कुज न हुंदा ।
समझ आई ते लंघया वेला, पाप पुन्न भरमाया ॥
मौत खिलौती करे इशारे, जल्दी औन नूं कहंदी ।
हुनते परला पार है दिसदा, जेहड़ा सिर ते आया ॥
की मैं करां, ते किथे जावां, समझ न मैनूं औंदी।
हथ बन्न अरदास गुजारां, रहंदा तरले पाया ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे सतिगुरु, पार करावन हारा।
तेरे बिना न कोई मेरा, परले पार कराया ॥

आनन्द

191. मन प्रभु संग लागा, लाग गयो।
हिरदय प्रेम समाया अब तो, दुविधा भाग गयो ॥
अब है हरदम याद पिया की, मनवा ता ही लागा।
है आशा तृष्णा त्याग जगत की, मन आनंद भयो ॥
मन में आश नहीं है कोई, लोभ क्रोध कछु नाहीं ।
अंतर लगा बाण मन माही, थिरता आए गयो ॥
अंतर जगमग होय रहा है, तम भागा सारा ही ।
होत प्रकाश है अजब अलौकिक, नाद है प्रकट भयो ॥
अंतर बाजे बजत निरंतर, सतत समाधि लागी ।
जगत विलीन भया है अब तो, आतम लाग लयो ॥
तीर्थ शिवोम् आनंद समाया, प्रभु है संग विराजे ।
न कुछ लेना देना जग से, बंधन मुक्त भयो ।

192. दीपक ऐसा दिया जलाए, बिना तेल और बाती ।
वर्षा दी बरसाए अंदर, बादल देख न पाती॥
सद्गुरुदेव अलौकिक किरिपा, कीनी मो पर भारी ।
दिया जगाए सोती मो को, माया थी भरमाती ॥
चेतन नाम हुआ अब अंतर, लीला अपरम्पारा।
करती अनुभव, देखत रहती, पर मैं कह न पाती ॥
आशा तृष्णा माया छूटी, अंतर सुख है पाया।
अब तो मस्त बना है मनवा, बलिहारी गुरु जाती ॥
आए कोई जगाए मोहे, आश यही थी रहती।
किरिपा होई, माया छूटी, रहत बनी मदमाती ॥
तीर्थ शिवोम् आनंदित मनवा, शोक मोह सब भागे ।
तम नाशा, मन हुआ प्रकाशित, राम प्रेम मद माती ॥

193. तन भीगे तो भीगन देयो, इसकी न परवाह ।
वर्षा प्रेम की होवन देयो, करो नहीं तुम आह ॥
मैं मिलसी प्रियतम जा अपने, सेज पिया की सोऊं ।
देख के मिलन अनूठा हमरा, करसी दुनिया वाह॥
मूरख फिकर करे चादर की, कहीं न मैली होए।
यह न जानत, कभी न उजली, रहत करत परवाह ॥
भाव मेरा चादर से उठा, प्रियतम मिलन मैं पाया।
करत विहार पिया संग हरदम, दूजी मन न चाह ॥
जगत विषय मीठे हैं लागत, देवें प्रभु विमुखता ।
हृदय प्रेम ही एक है वस्तु, कटत गले का फाह ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा ही प्रियतम, हिरदय प्रेम जगाए ।
अंदर बाहर पीव विराजे, किस का भय परवाह ॥

माया

194. आशा मरे न तृष्णा जाए, यह ही खेल है माया ।
आशा भरमाया जग सारा, यह जग छाया माया ॥
माया उपजे माया सिमटे, धारण दृश्य अनेकों ।
माया रंग भरे बहुरंगे, रूप है भाया माया ॥
रूप अरूप कुरूप वह धारे, दुविधा प्रकट करे वह ।
कभी उठाए कभी गिराए, न कोई समझे माया ॥
छल बल कौशल सभी करे वह, नाहीं पकड़ में आवे ।
प्रभु है मेरा अनत अलौकिक, अनत बनाई माया ॥
माया देत दिखात सब कुछ, जो है जग में नाहीं ।
ऐसी नटनी जादूगरनी, जगत दिखाया माया ॥
हे माया कर जोड़ पुकारूं, करो कृपा अब मो पर ।
मैं शिवोम् बेचारा कैसे, समझूं तेरी माया ॥

अन्त का पश्चाताप

195. अब सफेदी आ गई, जीवन निकलता ही गया।
कर गुजरने को जो अवसर, दूर हटता ही गया ॥
सामने अंतिम समय, अगला किनारा दिखता ।
छूटता जग हाथ से, जीवन निकलता ही गया ॥
हो गई कमजोर यह, मजबूत जो यह देह थी ।
विष हुआ अमृत भी अब, जीवन निकलता ही गया ॥
क्या कहूं किससे कहूं, दुख जो मुझे है व्यापता ।
है कोई सुनता न अब, जीवन निकलता ही गया ॥
प्रभु ही इक सहायक, वह ही सुननेहार है।
सब छूटता है हाथ से, जीवन निकलता ही गया ॥
शिवओम् यह काया तो अब, इतिहास बनने आ गई।
इतिहास भी कब तक रहे, जीवन निकलता ही गया ॥

196. है अंधेरी रात लंबी हो रही,
जग में है वह मन को लेकर सो रही ।
जग तमाशा देखते ही देखते,
उम्र तो है जाए पूरी हो रही ॥
मैं रहा माया में भरमाया पड़ा,
होश कुछ तन की या मन की ना रही।
होश आया तब उमरिया जा चुकी,
कट गई सारी ही कांटे बो रही ॥
मन में पीड़ा, तन उठा न जाए है,
अब नहीं हो कुछ भी मुझसे पाए है,
क्या करूं कुछ बात बन न पाए है,
उम्र तो है बीतती ही जा रही ॥
मैं बना चंचल जगत विसयों रहा,
अकड़ता फिरता कि मद में ही रहा।
मैं रहा करता ही मिथ्याचार सब,
पाप कर्मों में ही बीती जा रही ॥
अब समझ आई कि जग में सार न,
पर है उतरा सिर से कोई भार न।
है प्रभु तेरे सिवा कोई नहीं,
मैं रहा ही सोचता पर वह तो निकली जा रही ॥
शिवोम् अब भी ले शरण भगवान की,
अब भी बिगड़ा हैं नहीं तेरा नसीब ।
हे दयालु पतित पावन रामजी,
यह नहीं सोचे कि अब तो जा रही ॥

197. सोचते सोचते रह गए।

जिंदगी के निकल दिन गए, दिन तो बेकार ही बह गए ॥
शाम को धूप जाती है ढल, ऐसे जीवन निकल ही गया।
पहुंच पाए न मंजिल पर हम, हम तो रास्ते में ही ढह गए।
जिंदगी है गई रायगां, आरजूएं भी वैसी रही ।
कुछ न पाया कमाया न कुछ, हाथ मलते यूं ही रह गए ॥
पाक दिल भी हुआ है नहीं, न इबादत खुदा की हुई ।
पर तड़पते तमन्ना लिए, हम मुंजस्सम गुनाह रह गए ॥
तुमसे पूछा कि जाएं कहां, सिर झुका के यह फरमाया ।
तुम रहो सहते दुनिया के गम, जाते जाते यही कह गए ॥
अब मैं आजुरदा दिल हूं बना, वक्त तो अब निकल ही गया।
कोई रास्ता न सूझे मुझे, घर तमन्नाओं के ढह गए ॥
हश्र शिव ओम् यह ही हुआ, जिन्दगी के गए बीत दिन।
कुछ भी हासिल हुआ है नहीं, बेवजह दिन फिसह ही गए ॥